समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

फरवरी २००६ ▲ वर्ष ५६ ▲ अंक २ ▲ एक प्रति १० रुपए ▲ वार्षिक १०० रुपए

झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन का द्वितीय अधिवेशन देवघर में सम्पन्न

राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस के अवसर पर मारवाड़ी सम्मेलन भवन में राष्ट्रीय पताका फहराते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान। उपस्थित हैं सम्मेलन के राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री राम औतार पोद्दार, पं. बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया, मंत्री श्री गोपाल अग्रवाल, श्री सुभाष मुरारका, श्री पेम सुरेलिया, श्री ओम लड़िया, सुप्रसिद्ध कवि श्री ताऊ शेखावटी आदि।

झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल मरांडी। साथ में हैं झारखण्ड विधानसभा अध्यक्ष श्री इन्दर सिंह नामधारी, प्रान्तीय अध्यक्ष श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया, स्वागताध्यक्ष श्री तिलोक चन्द बाजला, श्री ताराचन्द जैन, अध्यक्ष दिगम्बर जैन धार्मिक न्यास बोर्ड, देवघर।

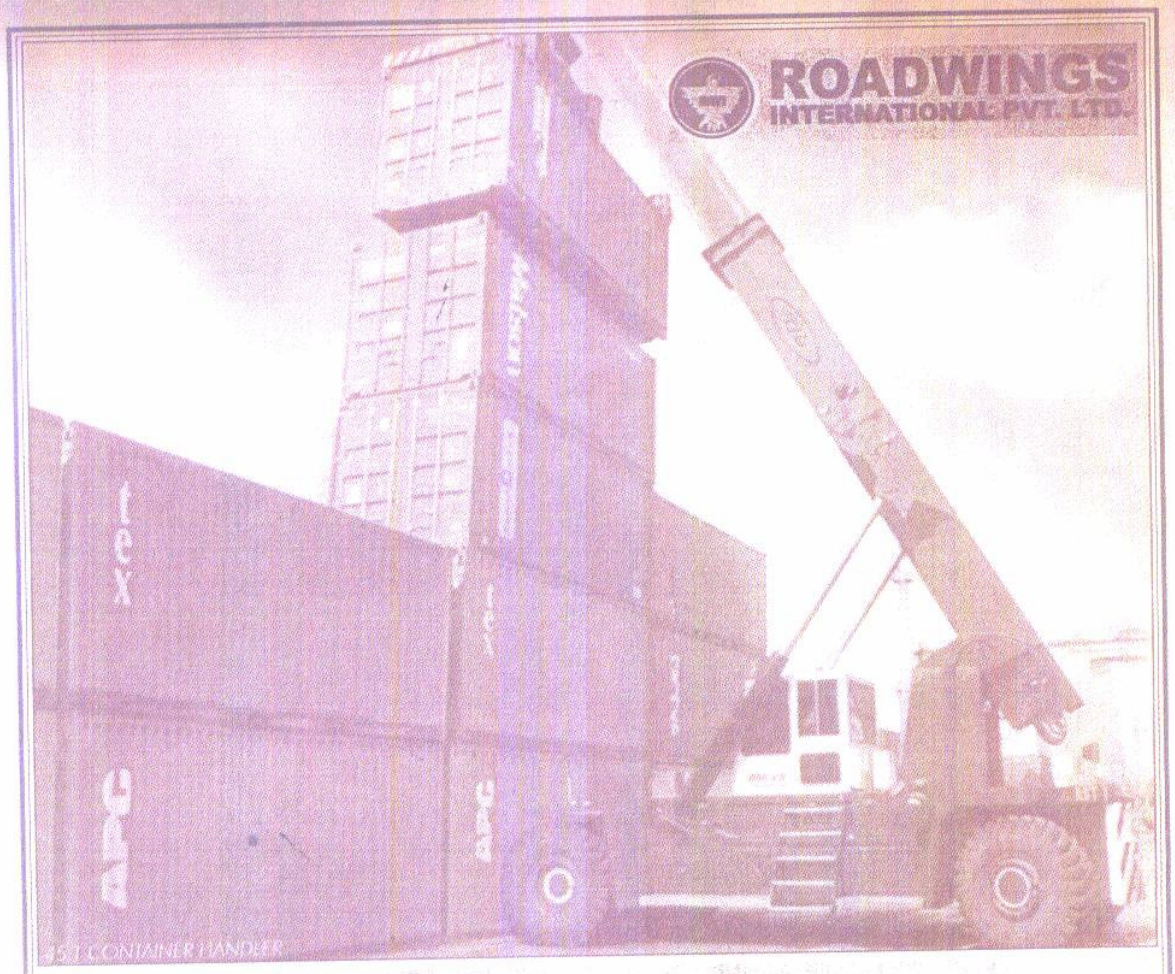

Equipped with Modern Container Handling Equipments

Head Office :

8, Camac Street, Kolkata - 700 017
Phone : 2282-5784/5849, Fax : 033-2282-8760
E-mail : roadwingsinternational@gmail.com

Zonal Office :

"Nirma Plaza", Moral, Makwana Road
Andheri (E), Mumbai 400 059
Phone : 2850 7928, Fax : 022-2850 7899
E-mail : roadwings@vsnl.com

इस अंक में

अनुक्रमणिका	३
जनवाणी	४
सम्पादकीय / *श्री नंदकिशोर जालान*	५-६
अध्यक्ष की कलम से / *श्री मोहनलाल तुलस्यान*	७
अधिवेशन (बिहार व उत्कल) एवं सम्मेलन डायरेक्टरी / *श्री मांगीलाल चौधरी*	८
हाथों में अंगारों को लिए सोच रहा था, कोई मुझे... / *श्री भानीराम सुरेका*	९
नया साल-नयी मंजिलें (कविता) / श्री संदीप जैन	९
समाज और राष्ट्र के निर्माण में हमारा महत्वपूर्ण योगदान / *श्री दीपचंद नाहटा*	११
लाभ और भोग नहीं, त्याग और सामाजिक कल्याण	११
कॉफी हाउस की टेबल से / *श्री बुधमल शामसुखा*	१३
गजल / *श्रीमती कोमल अग्रवाल*	१३
अपने को पहचानो / *श्री पुष्कर लाल केडिया*	१५-१६
नींद से जागो (कविता) / *श्री सुशील कुमार मोहता*	१६
इस राष्ट्ररूपी कृष्ण के विश्वास की कसौटी पर खड़े उतरें / *श्री बंसी लाल बाहेती*	१७
अंधविश्वास / *श्रीमती ऊषा गुप्ता*	१८
दो कविताएं- यूं नभटकावो / अरण्य रोदन / *डॉ. दीनदयाल ओझा*	१८
दूध के बदले ले आया आध्यात्मिक आनंद / *श्री सुभाष लखोटिया*	१९-२०
नारी का समुचित सम्मान करें / *डॉ. सीताराम गुप्त 'दिनेश'*	२०
बड़ी सी बात / *श्री प्रह्लाद श्रीमाली*	२१-२२
जीवन में 'वास्तु शास्त्र' का प्रत्यक्ष प्रभाव / *श्री श्यामलाल जालान*	२३
औद्योगिक युग में आध्यात्मिकता की जरूरत / *श्रीमती रंजू मोदी*	२४
अमृत घट / *श्री बैंजामिन फ्रेंकलीन*	२४
आज भायला होली है (कविता) / *श्री ताऊ शेखावाटी*	२५
होली कैसे आज मनाऊं ? (कविता) / *श्री युगल किशोर चौधरी*	२५
ज्ञान अमृत / *श्री अरविन्द*	२५

युग पथ चरण

- अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा गणतंत्र दिवस समारोह सहित बिहार, झारखंड, पूर्वोत्तर, पश्चिम बंग, उत्कल, आंध्र प्रदेश, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलनों की रिपोर्टों के साथ अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच एवं अन्य संस्थाओं की भी महत्वपूर्ण रिपोर्टें व अंत में सभी सदस्यों के लिए सूचना।

२६-३४

समाज विकास

फरवरी, २००६

वर्ष ५६ ● अंक २

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता- ७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

ज न वा णी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है।

- सम्पादक

मैं आपका सदस्य बनना चाहता हूं एवं पत्रिका 'समाज विकास' के साथ-साथ आपके अन्य सेवाओं को पाना चाहता हूं। कृपया जानकारी भेजें। यदि संभव हो तो प्रतिनिधि भेज देवें।

- मनोज अग्रवाल, दिल्ली

समाज विकास जनवरी अंक प्राप्त हुआ। इसके प्रत्येक लेख अपने आप में एक विशेषता रखते हैं। श्रीमती सुधा गोयल द्वारा लिखा 'परित्यक्ता नारी और समाज' बड़ा ही मार्मिक एवं विचारणीय है। नारी का परित्यक्ता होना अपने आप में बहुत बड़ा अभिशाप है। जरूरत है समाज के सोच के नजरिये में बदलाव की। ऐसी विकट परिस्थिति में उलझी नारी को उबारने हेतु अ.भा.मा. सम्मेलन के अधिकारीगण को एक ऐसी समिति का गठन करना चाहिए जो सम्पूर्ण राष्ट्र स्तर पर ऐसी समस्याओं का निदान अपने स्तर से करें ताकि भविष्य में इतिहास के पन्नों में परित्यक्ता शब्द समाप्त हो जाये।

- सत्यनारायण तुलस्यान
मुजफ्फरपुर, बिहार

समाज विकास जनवरी २००६ देखने व पढ़ने को मिली। माह प्रति माह अपनी शैली विचारों व कलाओं के माध्यम से पत्रिका का स्तर ऊंचा उठ रहा है। काव्य को भी उचित स्थान देने का प्रयास करें। इस अंक में राजस्थान का वैश्य व्यापारी वर्ग, अनमोल वचन, सामाजिक चिंतन विशेष रूप से प्रशंसनीय लगा।

- डॉ. प्रमोद अग्रवाल गोल्डी
नैनीताल

जनवरी अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका की कलेवर एवं साज-सज्जा देखकर मन अति प्रसन्न हुआ। सम्मेलन के ७१वें वर्ष पदार्पण में हार्दिक बधाई। देखते-देखते सम्मेलन ने काफी लम्बा सफर तय कर नई-नई चुनौतियों के समक्ष सफलापूर्वक कार्य सम्पादन किये हैं, यह अपने समाज के लिए बड़े ही गौरव की बात है। आज भी हमारे समाज में ऐसे मनीषी हैं जिनकी कलम से हमें बहुत कुछ सीखना है। आदरणीय अध्यक्ष श्री तुलस्यानजी के लेख वास्तविकता में सजीव एवं काफी प्रभावशाली होते हैं और उन्होंने सच ही कहा है कि ''समय के मूल्य को पहचानो।'' खासकर हमारी युवा पीढ़ी को इस पर अमल करना है और उनके बताए हुए मार्ग पर चलना चाहिए। यदि समय रहते ही हम चेत जाते हैं और उसका सदुपयोग सही ढंग से करें तो मैं समझता हूं कि समाज की उन्नति एक दिन अधिक निखर कर आवेंगी।

- लक्ष्मीनारायण शाह
राउरकेला (उड़ीसा)

आपके हौसलों ने हमें हिम्मत दी, इस हिम्मत के सहारे हम रोप सके समाज की उर्वरा जमीन पर विचार का एक पौधा। 'समाज पत्रिका' पौधा आगे वृक्ष बने सो चाहिए आपके स्नेह का जल।

- अशोक कुमार अग्रवाल
खेतराजपुर, उड़ीसा

'समाज विकास' दिसम्बर अंक बहुत ही उच्चस्तरीय बन पड़ा है। श्री सीतासम शर्मा के संपादकीय ने बेहद प्रभावित किया। सम्मेलन के बारे में उनका यह कहना कि उसकी प्रासंगिकता हमेशा बनी रहेगी, पूरी तरह युक्तिसंगत है। राष्ट्रीय अध्यक्ष के आलेख में मारवाड़ी समाज के बारे में उनका विश्लेषण वास्तविकता पर आधारित है एवं समाज को २१वीं सदी के अनुरूप प्रगतिशील समाज बनाने का आह्वान स्वागत योग्य है। सर्वश्री नन्दकिशोर जालान एवं भानीराम सुरेका के आलेख भी प्रभावशाली एवं प्रेरक है। जनवरी अंक में भी श्री तुलस्यान के आलेख ने काफी प्रभावित किया। सर्वश्री मांगीलाल चौधरी बालकृष्ण गोयनका एवं ओम लड़िया के आलेख पठनीय और मननीय हैं।

सम्मेलन द्वारा अपने सदस्यों की डायरेक्टरी का प्रकाशन बहुत ही प्रशंसनीय एवं उत्साहवर्द्धक है। समाज विकास प्रगतिपथ पर बढ़ता रहे हार्दिक अभिलाषा है।

- युगल किशोर चौधरी
चनपटिया (बिहार)

जनवरी २००६ अंक में डा. मनोहरलाल गोयल ने 'झारखंड में मारवाड़ी झारखंडियों की भूमिका' लेख में मारवाड़ी विधायकों एवं कई अन्य लोगों पर प्रकाश डाला है। उन्होंने झारखंड के एक बहुत ही ख्याति प्राप्त एवं बिहार विधानसभा के दो-दो बार सदस्य रहे स्व. नथमल डोकानियां को किस प्रकार भुला दिया यह मेरी समझ से परे है। स्व. डोकानिया राजमहल विधानसभा क्षेत्र से एक बार स्वतंत्र पार्टी एवं दूसरी बार कांग्रेस पार्टी से जीतकर राज्य मंत्रिमंडल (बिहार) की शोभा भी बढ़ा चुके हैं। स्व. डोकानिया १९६७ से १९७७ तक लगातार बिहार की राजनीति में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए जाने जाएंगे। १९९० से लेकर १९९५ तक राजमहल विधानसभा क्षेत्र से ही रघुनाथ प्रसाद सोडानी विधायक रह चुके हैं एवं अभी वर्तमान में जाने माने अधिवक्ता के रूप में कार्यरत हैं। कृपया पत्रिका में मेरी इस जानकारी को पाठकों तक पहुंचाने की कृपा करेंगे।

- विनोद कुमार अग्रवाल
राजमहल

खेद प्रकट

गत अंक में 'सीरस' द्वारा लिखित लेख में कुछ अशोभनीय शब्दों के प्रकाशन का हमें खेद है।

- सम्पादक

सौ वर्ष की क्रान्ति के बढ़ते कदम-व-कदम

✍ नन्दकिशोर जालान

परिवर्तन समाज का, वस्तुत: जीवन का अटल नियम है। कोई भी नियम पद्धति या व्यवहार सदा सदा के लिए समान नहीं रहता। जैसेजैसे ज्ञान विज्ञान का विकास होता है वैसे-वैसे विचार बदलते जाते हैं और विचारों के परिवर्तन के साथ जीवन पद्धति भी बदलती रहती है। यही कारण है कि इतिहास का कोई युग ऐसा नहीं हुआ जिसमें सामाजिक विकृतियां और उनको दूर करने के प्रयत्न न हुए हों। अवांछित और वांछित नियमों और परम्पराओं का संघर्ष बराबर रहा है।

इस सिद्धांत के अनुसार आज हम जिनको सामाजिक विकृतियां कहते हैं, वे किसी समय सुधार वृतियां बन कर आयी होंगी। वास्तव में उस समय जो कुछ विकृतियां मानी गई होंगी, उनका स्थान उन सुधारों ने लिया होगा, जो कालक्रम से बदलते हुए परिवेश में विकृतियां बन गई।

सैकड़ों वर्षों से जिन सामाजिक प्रथाओं और रीति-रिवाजों में मनुष्य का सामाजिक जीवन जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त बंधा हुआ है, वे न केवल निस्सार हो चुकी है, बल्कि निश्चित रूप से उसकी प्रगति में बाधक और हानिकारक है। आज के विचार और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कसौटी पर वे खरे नहीं ठहरते। आज जैसे व्यक्ति वैसे ही समाज स्वतंत्रता और समानता की दिशा में अग्रसर हो रहा है, किसी तरह की भेद-भावमूलक दृष्टि और पद्धति चल ही नहीं सकती। जैसा एक फ्रांसीसी कवि ने कहा है- ''नई पीढ़ी का मुक्त मानव पुरानी पीढ़ी के बन्द मानव से टकरा रहा है। इस टक्कर में समाज के बंधन टूट रहे हैं - बिखर रहे हैं। समाज तो वास्तव में खुलकर अधिक स्वस्थ और विकसित हो रहा है।'' जो समाज भेद भाव की दीवारों में जकड़ा हुआ था और अलग-अलग दायरों के बंधन बनाये हुए था, वही बंदी और बीमार समाज था। जिन सुधारक कहे जाने वाले लोगों ने पुरानी विकृतियों के खिलाफ जेहाद करके अस्सी वर्ष पहले भी जो सुधार किये थे और जिनको समाज में फैलाया था, वे खुद आज विकृत और विकारग्रस्त हो गये हैं, अर्थात् कल के सुधारक भी आज प्रतिक्रियावादी हो गये लगते हैं। सामाजिक सुधार या सामाजिक क्रान्ति कभी स्थिर नहीं रह सकती है। उसके अन्तर विचारों और तौर तरीकों में समसामयिक परिवेश के अनुसार परिवर्तन करना होता है। वास्तव में क्रांति कभी नहीं रुकती। वह तो एक सनातन और शाश्वत क्रिया है। जो हमने कल किया और जिया वही आज की सभी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता। आज की समस्याओं को हम कल के समाधानों से कदापि हल नहीं कर सकते।

अलग अलग समय की आवश्यकतानुसार राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं अन्य क्षेत्रों में परिवर्तन के शाश्वत नियम के अनुसार जो बदलाव आये हैं उन सबो के पीछे उस युग की युवा शक्ति द्वारा उठाये गये क्रांतिकारी कदमों से होते आये हैं। एक सरसरी निगाह से देखें तो वैदिक युग से आज तक हर क्षेत्र में परिवर्तनों की गंगा निरन्तर बहती रही है। हर युग में उस समय की नई सोच एक क्रान्ति के रूप में उभर कर आती रही है और जनता का सहयोग एवं आशीर्वाद प्राप्त कर अपने लक्ष्य के रूप में परिवर्तन करवाती रही है।

पुराने समय का स्मरण न करें, पिछले सौ वर्षों में जितना बड़ा परिवर्तन अपने देश और दुनिया में आया है एवं आ रहा है वह परिवर्तन के अटल नियम को भली प्रकार प्रदर्शित करता है, जिसके कुछ उदाहरण हैं -

* सामाजिक स्तर पर १९२०-३० और सन् २००५ के मारवाड़ी समाज में सामाजिक स्तर पर युवा शक्ति ने इतनी बड़ी क्रान्ति लाई है कि उस युग के व्यक्ति को एवं उस समय के रीति-रिवाजों को पहचानना भी असंभव सा है।
* सन् १९११ में ब्रिटिश सरकार ने जितना बड़ा दरबार दिल्ली में आयोजित किया था, कौन सोच सकता था कि भारत में उसके राज्य की अवधि सीमित है। युगपुरुष महात्मा गांधी और उस प्रकार के अनेकानेक लोगों का आविर्भाव हुआ और देश १९४७ में स्वतंत्र हुआ।
* सन् १८५० से उद्योग के कल कारखाने दुनिया में लगने शुरू हुए थे जो विदेशियों के हाथों से इस देश में बीसवीं शताब्दी में प्रारंभ

तो हुए पर १९७० तक एक ओर उन सबों पर आधिपत्य भारतीयों के हाथ में आया तथा अपने समाज ने अनेकानेक उस युग के अनुकूल नये कल कारखाने स्थापित किये।

* विभिन्न उद्योग एवं व्यवसायों पर सन् १९७० के आसपास राष्ट्रीयकरण का नारा बुलन्द हुआ। एयरलाइन्स, इन्श्योरेंस, कोल खदानें, बैंक आदि संस्थान सरकारी बना लिये गये और दूसरी ओर पश्चिम बंगाल एवं कुछ अन्य प्रांतों में मजदूर एवं कर्मचारियों ने अपने मालिकों से असंभव मांगों के लिए भिड़न्त का युग प्रारंभ किया जिससे अनेकानेक उद्योग बंद हो गये। गत शताब्दी शेष होने के पहले ही इस नीति में पूरा का पूरा बदलाव आ गया। राष्ट्रीयकरण तो बन्द हुआ और हर क्षेत्र में आपसी 'कम्पीटिशन' की नीति प्रसारित हुई जिसने देश की विभिन्न दिशाओं में बन्द दरवाजे खोल दिये और देश असीमित प्रगति के पथ पर पुन: चल पड़ा। इसके परिणाम स्वरूप आज की स्थिति एक नये रूप में आयी और उसके असीमित फैलाव और उससे उत्पन्न उपलब्धियों का अपने आप में एक बहुत प्रभावशाली रूप दिखाई पड़ने लगा है।
* टाटा, बिड़ला की एयरलाइन्स की अब किसे याद है। लेकिन अब इण्डियन एयरलाइन और एयर इंडिया की प्रतिस्पर्धा में प्राइवेट कम्पनियों के हवाई जहाज आकाश में चक्कर लगा रहे हैं और निकटवर्ती वर्षों में उनकी संख्या २५० पार कर जाने की है। किसने स्वप्न में भी सोचा था कि कुछ एयरलाइन्स तो एक लाख यात्रियों को रु. १/- एवं रु. ९९९/- में हवाई यात्राएं करवाने की घोषणा करेंगी जो क्रम प्रारंभ भी कर दिया है। देशी व अन्तर्देशीय किरायों में भी कमियों की घोषणा निरन्तर हो रही है। यह इंगित करता है कि वह समय दूर नहीं जब देश के हर क्षेत्र के व्यक्ति के लिए इनका 'कम्पीटिशन' हवाई यात्राएं सुलभ करा देगा।
* सरकारी बीमा कम्पनियों की टक्कर अब प्राइवेट बीमा कम्पनियां काफी सफलता के साथ करने लग गई हैं तो अपनी रकम लगाने में 'म्यूचअल फण्ड' की रोचकता दिनों दिन पैर पसारने लगी हैं।
* राष्ट्रीयकृत कोयला खदानों ने पुराने व नये उद्योगों को विदेशों से ऊंचे दामों में कोयले का आयात करने पर विवश किया। फलत: एक ओर देश में नीति परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई तो दूसरी ओर यहां के उद्योगपतियों को विदेशों में कोयला खदानों के अधिग्रहण की छूट दी जाने लगी।
* राष्ट्रीयकृत उद्योगों में तथाकथित 'नवरत्नों' को छोड़कर अब हर प्रांतीय सरकार इन्हें बेचने या इनमें अन्य उद्योगपतियों को साझेदार बनाने में प्रयासरत है जिससे नित प्रतिदिन हो रहा घाटा बन्द किया जा सके। इसके दूरी ओर 'मिलिटेन्ट लेबर युनियनों' को उद्योग की आवश्यकतानुसार अपनी नीतियों को बदलने पर निरन्तर जोर दिया जा रहा है।
* इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारंभ के पहले ही विदेशी कम्पनियों को भारत में उद्योग-व्यापार प्रारंभ करने के अधिकतर रास्ते खोल दिए गए जो क्रम आज भी जोरों से चालू है, तो दूसरी ओर भारतीय उद्योगपति विदेशों में कल कारखानों का अधिग्रहण करने में पूर्ण रूप से क्रियाशील हो रहे हैं। इसके अलावा वहां विभिन्न 'सर्विस सेक्टरों' में भी अपने समाज के एवं अन्य भारतीय अग्रिम पंक्ति के रूप में उभर रहे हैं जिनकी रिपोर्ट समय-समय पर आती रहती है।
* वैज्ञानिक अनुसंधान में समाज सहित देशवासी किसी से पीछे नहीं हैं। न्यूक्लीयर इनर्जी (देश-रक्षा का साधन सहित), सूर्य ऊर्जा व वायु ऊर्जा से बिजली उत्पादन, मोलसिस व पौधों व अन्य साधनों से डीजल आदि का उत्पादन व आदि आदि नई दिशाओं की ओर संकेत करते हैं।
* शैक्षणिक दृष्टि से 'आई.टी.', 'काल सेंटर' आदि अनेक आधुनिक क्षेत्रों में अंग्रेजी की निपुणता व आर्थिक सुविधाओं के कारण विदेशी कम्पनियां भारत में नित नई शाखाएं खोल रही हैं या यहां के लोगों को अपने देश में आने का आमंत्रण दे रही है।
* मोबाइल टेलीफोनों की तेजी से एक करोड़ की संख्या पहुंचने के रूपक से भारतीय टेलीफोन कम्पनी ने ट्रंक काल की दर १ मार्च से घटाकर एक रुपया प्रति मिनट करने की घोषणा कर दी आदि अनेकानेक रूपक परिवर्तित हो रहे हैं।

अमेरिका के राष्ट्रपति श्री जार्ज बुश, जो ता. १ मार्च को भारत पहुंच रहे हैं, ने 'एशियन कोनफरेन्स' में गत दिनों पिछले पचास वर्षों में भारत में हुई प्रगति पर एक प्रकार का आश्चर्य व अत्यधिक सन्तोष व्यक्त करते हुए कहा था कि भारत की जनसंख्या अमेरिका से तीन गुनी है और वहां प्रगति व परिवर्तन की अपार संभावना है।

देश के सभी हिस्सों में फैले अपने समाज ने बीसवीं शताब्दी में उपर्युक्त सभी परिवर्तनों में सशक्त भूमिका निभाई और आज विदेशों में भी अपनी जन्मजात योग्यता को प्रसारित करने लगा है। सामाजिक दृष्टि से एक नये अन्तर्देशीय सामाजिक रूपक की ओर कदम बढ़ने प्रारम्भ हो रहे हैं। एक नई क्रांति का चक्र प्रारम्भ हो चुका है। पहले की तरह इस क्रान्ति को समाज की युवा पीढ़ी ही विचार क्रांति व जीवन क्रान्ति में स्थापित करती जायेगी, यह ऐतिहासिक सत्य पुन: दिनोंदिन कैसे और कितना समाज को अग्रगति दे पाता है वह भविष्य के गर्त में छिपा है।

सम्मेलन की बीसवीं शताब्दी में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इक्कीसवीं शताब्दी में नये चिन्तन से यह नई भूमिका का निर्वाहन करेगा इसमें मुझे शंका नहीं है।

हम अभिशापित प्रहरी होंगे या कि होंगे क्रांतिदूत

✍ मोहनलाल तुलस्यान

"कंजूस आदमी अंधा होता है, क्योंकि वह धन के सिवाय और किसी सम्पत्ति को नहीं देखता। फिजूलखर्ची करने वाला अंधा होता है क्योंकि वह आज को ही देखता है कल को नहीं देखता।"

धन जीवन के लिए जरूरी है। बिना धन के मर्यादित, सुखी, शांतिपूर्ण जीवन जीना संभव नहीं है। लेकिन सिर्फ धन के सहारे ही जीवन नहीं चलता। जीवन में धन के अतिरिक्त भी बहुत सी चीजें हैं जिनकी जरूरत होती है।

मिडास की कहानी हम सभी जानते हैं कि किस तरह सोने के लोभ में वह अंधा हो गया था पर बाद में उस मिडास को भी अपनी गलती का अहसास हुआ था।

हमारे पूर्वजों को भी इस बात का ख्याल था तभी वे धन के साथ-साथ परिवार, समाज और राष्ट्र के हित में अपने योगदान को भी अहमियत देते थे। सिर्फ धन कमाना और संग्रहित करना ही अगर हमारे पूर्वजों का ध्येय होता तो आज मारवाड़ी समाज का स्वरूप कुछ और होता। हो सकता था धनाढ्यों की संख्या आज की वनिस्पत अधिक होती पर सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक क्षेत्र में इस समाज का अवदान शून्य होता।

मारवाड़ी समाज में धन उपार्जन की प्रवृत्ति रही है तो धन के समुचित उपयोग की कला का ज्ञान भी रहा है। "मोटा खाने, मोटा पहनने' की नीति पर चलने वाले हमारे पूर्वजों को सदैव यह ख्याल रहता था कि जीवन का सच्चा आनन्द तभी है जब हम अपने सदृश अन्य जीवों के लिए भी कुछ कर सकें। राष्ट्रकवि दिनकर विरचित 'कुरुक्षेत्र' की इन पंक्तियों को वे पाथेय मानते थे-

एक पंथ है छोड़ जगत को, अपने में रम जाओ
खोजो अपनी मुक्ति और निज को ही सुखी बनाओ।
अपर पंथ है औरों को भी, निज विवेक बल देकर
पहुंचो स्वर्ग लोक में जग से साथ बहुत को लेकर।।

यही कारण था कि राजस्थान के किसी गांव का एक आदमी जब दिशावर जाकर सम्पत्ति अर्जित करता था तो पूरे गांव की उम्मीद उस आदमी पर टिक जाती थी कि वह गांव के अन्य लोगों को भी आगे बढ़ायेगा, गांव की उन्नति के काम करेगा। लोग करते भी थे तभी तो दिशावर पर निकलने वालों को खाने-रहने की चिन्ता नहीं होती थी। वे निश्चिंत होकर अपने किसी ग्रामीण या सगे-संबंधी के पास पहुंच जाते थे और फिर उसके सहयोग से जीविकोपार्जन का उपाय ढूंढते थे।

समय-चक्र के साथ आज मारवाड़ी समाज के स्वरूप में परिवर्तन आया है। धन उपार्जन के तौर-तरीके में भी बदलाव आये हैं। नई पीढ़ी के मारवाड़ी धन कमाने के तरकीबों में संभवत: अपने पूर्वजों से भी आगे हैं लेकिन पीड़ा इस बात की है कि वर्तमान पीढ़ी का उद्देश्य धन कमाकर उसे सिर्फ अपने सुख-साधनों पर खर्च करना है। धन की प्रचुरता के साथ धन का प्रदर्शन दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है।

पिछले बीस-पच्चीस सालों में मारवाड़ी समाज द्वारा सामाजिक संस्थान यथा विद्यालय, कॉलेज, दातव्य चिकित्सालय, अस्पताल आदि की स्थापना के प्रयास नहीं के बराबर हुए हैं और जो हुए हैं वे इतने खर्चीले हैं कि आम आदमी वहां जाने की सोच भी नहीं सकता पर शादी समारोह, जन्मदिन, वैवाहिक जयंती, किट्टी पार्टी आदि पर खर्च बेलगाम तरीके से बढ़ता गया है।

जब भी किसी शादी में जाता हूं और वहां धन के अपव्यय और फिजूलखर्ची का नजारा देखता हूं तो रूह कांप उठती है। एक प्लेट उठाया और इसकी कीमत कई सौ रुपये की हो गई, जबकि खाने का वह सामान महज कुछ रुपयों का होता है। नाम के पीछे दाम देने की मनोवृत्ति कितनी घातक होती है यह आजकल के समारोहों में प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। एक ही शादी में कई-कई पार्टियां और हर पार्टी में सैकड़ों लोगों के खाने की व्यवस्था। साज-सज्जा, तामझाम का खर्च अलग।

अक्सर सोचता हूं कि महंगी शादियों के बजट का एक प्रतिशत अगर सामाजिक कार्यों के लिए दान दे दी जाय तो न जाने कितने जरूरतमंद लोगों का भला होगा और शादी की सार्थकता प्रमाणित होगी।

सैकड़ों तरह के खाद्य पदार्थों की फेहरिश्त न सजाकर महज २१ खाद्य पदार्थों की छोटी सूची ही जिसमें पानी से सूप तक सब शामिल हों तथा समारोहों में धन के अपव्यय पर कड़ाई से रोक लगे तो संभव है स्थिति में परिवर्तन आए। एक समय सम्मेलन के नेतृत्व में आन्दोलन करके धन के प्रदर्शन पर काफी हद तक लगाम कसना संभव हुआ था उसे आज फिर दोहराने की जरूरत है।

लक्ष्मी चंचला होती है। वह सदा किसी के साथ नहीं रहती। भविष्य में मारवाड़ी समाज के सामने क्या चुनौतियां होंगी एवं किस तरह उनका मुकाबला लोग करेंगे यह बता पाना असंभव है पर भविष्य के सुदृढ़ आधार के लिए यह तो जरूरी है ही कि आर्थिक दृष्टि से समाज के लोग संपन्न हों। अगर फिजूलखर्ची करके धन बर्बाद करते रहेंगे तो संकट में किस तरह लड़ पाएंगे।

हम लोग, जो सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं एवं समाज की बेहतरी की सोचते हैं, यह प्रयास करें कि समाज में घर कर चुकी कुरीतियों पर रोक लगे। जरूरत हो तो व्यवस्था के खिलाफ बगावत का शंखनाद करें ताकि भविष्य की पीढ़ी हमें अभिशापित प्रहरी के रूप में न याद करें बल्कि क्रांतिदूत की तरह हमसे प्रेरणा ग्रहण करे। हम कामयाब होंगे लेकिन पहले शुरूआत तो करें।●

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का १०म् प्रान्तीय अधिवेशन

२६ मार्च, २००६, रविवार

अधिवेशन स्थल
होटल स्वस्ति प्लाजा
(भुवनेश्वर)

स्वागताध्यक्ष	: श्री ओम प्रकाश लाठ
स्वागत मंत्री	: श्री किशनलाल भरतिया
प्रांतीय अधिवेशन के नव निर्वाचित अध्यक्ष	: श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया
नव निर्वाचित मंत्री	: श्री शिव कुमार अग्रवाल
संरक्षणकगण	
प्रमुख संरक्षक	: श्री वेदप्रकाश अग्रवाल
उप संरक्षक	: श्रीसुरेन्द्रकुमारलाठ(सांसद) (एमपी)
संरक्षण कगण	: श्री भगतराम गुप्ता

सभी केन्द्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारियों व सदस्यों को आमंत्रण।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी महिला सम्मेलन का अधिवेशन 'ज्योत्सना पर्व-०६' पटना सिटी में

२७ एवं २८ मार्च, २००६
सोमवार एवं मंगलवार

सभी केन्द्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारियों व सदस्यों से इस अवसर पर पधार कर आयोजन एवं आयोजक शाखा की गरिमा बढ़ाने का करबद्ध निवेदन

समुचित व्यवस्था हेतु आगमन की पूर्व सूचना भेजने का अनुरोध है।

अध्यक्षा	संयोजिका	सचिव
मीना गुप्ता	शीला गुप्ता	सीता झुनझुनवाला

"सम्मेलन डायरेक्टरी"

सम्मेलन के आजीवन सदस्यों को सूचित किया जाता है कि वे एक निवेदन पत्र देकर सम्मेलन कार्यालय से नि:शुल्क डायरेक्टरी प्राप्त कर सकते हैं। साधारण विशिष्ट सदस्य अपना पूर्ण सदस्यता शुल्क एवं निवेदन पत्र देकर नि:शुल्क इसकी एक प्रति प्राप्त कर सकते हैं। एक से अधिक प्रति के लिए उन्हें ५०/- रु. प्रति डायरेक्टरी की दर से भुगतान करना होगा। समाज का कोई भी व्यक्ति, जो कि सम्मेलन के सदस्य नहीं हैं, उक्त राशि देकर इन्हें मंगा सकते हैं। अन्तर्राज्यीय सदस्यों को उनके निवेदन पत्र के आधार पर मात्र डाक खर्च लेकर वी.पी.पी. द्वारा डायरेक्टरी भेजी जा सकती है।

अध्यक्ष	महामंत्री
मोहनलाल तुलस्यान	भानीराम सुरेका

विशेष

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के **महाराष्ट्रवासी सदस्यगण** सम्मेलन सदस्यता डायरेक्टरी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका के मुम्बई स्थित निम्नलिखित कार्यालय से पत्र देकर नि:शुल्क ले सकते हैं।

प्राप्ति स्थान

मेसर्स रोडविंग्स इन्टरनेशनल प्रा. लि.
"निरमा प्लाजा"
मरोल माकवाना रोड,
अन्धेरी (ईस्ट)
मुम्बई - ४०००५९
फोन : २८५०७८९९

हाथों में अंगारों को लिए सोच रहा था कोई मुझे अंगारों की तासीर बताए।।

✍ भानीराम सुरेका

हाथों में अंगारे लेकर उसके प्रभाव की बात करना हो सकता है मूर्खतापूर्ण आचरण कहलाए क्योंकि सभी जानते हैं कि अंगारे का काम जलाना है। यही उसकी तासीर है, उसका स्वभाव है।

आज मैं कलम हाथों में लिए सोच रहा हूं कि कोई मुझे कलम की तासीर बताए। कभी तोप के मुकाबले कलम उठाने की बात यानि अखबार निकालने की बात कही गई थी, लेकिन आज कलम घिसते-घिसते कागजों के ढेर लग जाएं, कई-कई ग्रंथ तैयार हो जाएं पर उसका प्रभाव नक्कारखाने में तूती की आवाज की तरह होता है।

पता नहीं आज समाज के लोग समाज को लेकर क्या सोचते हैं? जितना कुछ कहा जा रहा है, लिखा जा रहा है उसको लेकर उनकी प्रतिक्रिया क्या है? कुछ भी पता नहीं चलता। कई बार लगता है कि क्या समाज मूर्छित है? अथवा विस्मृति का शिकार? जीवंत समाज से तो यह अपेक्षा होती ही है कि वह सामाजिक धार्मिक-राजनीतिक-आर्थिक मुद्दों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करे ताकि सही और गलत का एहसास तो हो।

समाज में तेजी से बिखराव, जटिल मुद्दों पर मतान्तर एवं सामग्रिक उन्नति के सवाल पर किंकर्त्तव्यविमूढ़ता की स्थिति को देख-सुनकर मुझे अक्सर ऐसा प्रतीत होता है कि समाज के लोग बदल गये हैं।

थोड़ा सा सम्मान मिला - पागल हो गए।
थोड़ा सा धन मिला - घमंडी हो गए।
थोड़ा सा ज्ञान मिला - उपदेश की भाषा सीख ली।
थोड़ा सा यश मिला - दुनिया पर हंसने लगे।
थोड़ा सा रूप मिला - दर्पण ही तोड़ डाला।
थोड़ा सा अधिकार मिला - दूसरों को तबाह कर दिया।

क्या इस स्थिति में कोई समाज उल्लेखनीय प्रगति कर सकता है? उल्लेखनीय प्रगति तो तब होती है जब एक निर्दिष्ट लक्ष्य के लिए सामूहिक रूप से लोग जुटें, आपसी विचार-विमर्श करें एवं उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जी जान से लग जाएं।

अतीत के जितने भी उल्लेखनीय कार्य हुए सब सामूहिकता की बदौलत ही तो संभव हुए।

मैं यह जानता और मानता हूं कि सामाजिक संगठनों की प्रासंगिकता अभी खत्म नहीं हुई है और न होगी खासकर सम्मेलन जैसे राष्ट्रीय संगठनों की क्योंकि आने वाले दिनों में लोगों को जिन चुनौतियों से रूबरू होना है उसकी आधारभूत जरूरत को रेखांकित करने में सम्मेलन ने प्रभावी भूमिका निभाई है। वैचारिक स्तर पर सम्मेलन ने समाज को जो दिशा-निर्देशन दिये हैं उनकी अहमियत आज है, कल भी रहेगी।

जो लोग यह मान रहे हैं कि व्यक्तिगत विकास के बूते समाज की छवि निखारने का काम पूरा हो सकता है वे भ्रम में हैं। उन्हें यह सोचना चाहिए कि किस तरह समाज के अधिक से अधिक लोगों को संगठित कर सामूहिक विकास की अवधारणा को बल दिया जाए। सामूहिक विकास होने से समाज में बढ़ रहा अमीरी-गरीबी का अनुपात घटेगा और इसका फायदा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से पूरे समाज को मिलेगा।

आइए, इस बार होली में हम यह संकल्प लें कि जातीयता, साम्प्रदायिकता, धार्मिकता, प्रांतीयता की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर हम एक ऐसा समाज बनाने की दिशा में अग्रसर हों जिसमें मानवता सर्वोपरि हो। यह सम्मेलन की प्रगति के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगा। यह अंक आपके हाथों में जब तक पहुंचेगा आप फागुनी बयार में मदमस्त धूलंडी-छारंडी (होली) की तैयारियों में मशगूल होंगे। रंगों की विविधता से अपने पराये सबको रंगकर नये सम्बन्धों की शुरूआत को तत्पर होंगे। होली पवित्र त्यौहार है, इसमें मन मैला न करे। पवित्रता से खेलें। जहरीले रंगों की जगह अबीर-गुलाल से खेलें एवं पवित्रता से खेलें।

और अन्त में। अभी-अभी झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का अधिवेशन सम्पन्न हुआ जिसमें समाज को केन्द्रित कर बहुत से उल्लेखनीय विचार-विमर्श हुए। आगामी २६ मार्च को उत्कल का अधिवेशन होगा। इस तरह हमारे प्रान्तीय सम्मेलन निरंतर सक्रिय है और संगठन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं। यही आज की जरूरत भी है तभी अच्छे लोग सम्मेलन से जुड़ेंगे और सम्मेलन उत्तरोत्तर मजबूत होगा।

आप सबको रंगीली होली की अग्रिम बधाई!●

नया साल - नयी मंजिलें

- संदीप जैन, वीरपुर

बीते पुराने साल में, हमने कुछ खोया और कुछ पाया
जीवन में खुशियां भरने को, नया साल है आया।
नये जोश और नयी उमंग से, करना हमको हर काम,
मिलकर सबको आगे बढ़ना, ऊंचा करना अपना नाम।
नये साल के नये रंग में, हम सबको है रंग जाना,
मिलकर सबको आगे बढ़ना, हर मंजिल को है पाना।
मंजिल तभी मिलेगी हमें, जब सच्चाई से हर काम करें,
मान सभी को 'बन्धु' अपना, सबका ही सम्मान करें।

50-60 YEARS OF EXCELLENCE IN QUALITY PRODUCTS

PRABHAT MARKETING CO. LTD.

4, Synagogue Street
2nd Floor, Room No. 201
Kolkata - 700001

Ph : 033-2242-2585/4654 55252587
E-mail rohitashwaj@hotmail.com
Website : www.jalangroup.net

AUTHORISED DISTRIBUTORS OF

FINOLEX INDUSTRIES LTD.

FOR

Agricultural PIPES & FITTINGS
Sanitation & Plumbing Systems

D-1/10, MIDC. CHINCHWAD
PUNE - 411019
www.finolex.com

समाज और राष्ट्र के निर्माण में हमारा महत्वपूर्ण योगदान

✍ दीपचन्द नाहटा, भूतपूर्व महामंत्री अ.भा.मा.स., कोलकाता

स्वतंत्रता आन्दोलन से लेकर देश के औद्योगिक विकास एवं सामाजिक विकास में मारवाड़ी समाज की निर्णायक भूमिका रही है। मारवाड़ी समाज ने नये-नये क्षेत्रों में शोध कर, देश के कोने-कोने में बहुविध समाज एवं राष्ट्रनिर्माणकारी कार्य कर समाज एवं राष्ट्र के समक्ष अपनी अद्वितीय प्रतिभा का परिचय दिया है- उससे सारा राष्ट्र परिचित है।

हमारा अतीत चाहे कितना उज्ज्वल या गौरवमय रहा हो पर, आज के संदर्भ में हमारे समाज और राष्ट्र के विकास से संबंधित विभिन्न प्रकार के ज्वलंत प्रश्न हम सबके समक्ष चुनौती बनकर खड़ा है- जिनका हमें सही समाधान प्रस्तुत करना होगा।

आज हम विकासशील होने का दावा करते हैं। निश्चय ही हमने विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति भी की है। परन्तु विकास के साथ-साथ हम अपने गिरते हुए सामाजिक और नैतिक मूल्यों की ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं। निरक्षरता, गरीबी, बेकारी, साम्प्रदायिक सौहार्द की कमी, क्षेत्रियवाद, जन स्वास्थ्य का गिरता स्तर हमें आने वाली विषम परिस्थितियों से सचेत होने को कह रहा है। समय के रहते हमें सचेत होने की आवश्यकता है। कवि श्री कन्हैयालालजी सेठिया ने अपनी कविता में लिखा है- ''मत कर क्षण से द्रोह, समय का निर्णय क्रूर बहुत है।'' अब वक्त आ गया है- समय के मूल्य को पहचानने का, सामाजिक उत्थान का, गरीबी, बेकारी एवं बीमारी के उन्मूलन का, साम्प्रदायिक सौहार्द कायम करने का एवं समस्त भारतवासियों के मन में राष्ट्र के सम्पूर्ण विकास की भावना उत्पन्न करने का।

आज देश की अर्थ व्यवस्था का आधार कहा जाने वाला मारवाड़ी समाज आडम्बर और प्रदर्शन की ओर आकर्षित होने के कारण अपने द्वारा की गई गाढ़ी कमाई को फिजूलखर्ची में नष्ट कर रहा है। आज के संदर्भ में विभिन्न प्रकार के समारोहों में नये-नये ढंग से आडम्बर और प्रदर्शन में हो रहे अपव्यय हमें शर्मिंदा करते हैं- और समाज सुधार से संबंधित संस्थाओं के चिंता का कारण बनते हैं।

जब भी मारवाड़ी समाज संयम और सादगी के पथ से भटका है, मारवाड़ी सम्मेलन ने अपनी दूरदर्शिता से समाज को सही मार्ग दिखाने का प्रयत्न किया है। सम्मेलन ने वैवाहिक आडम्बर और प्रदर्शन के अलावा बाल विवाह का विरोध, पर्दा प्रथा, मृत भोज आदि अनेक प्रकार के सामाजिक सुधारों से संबंधित कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में होने वाली फिजूलखर्ची के विरुद्ध निरन्तर लड़ाई लड़ी है। प्रारम्भ में कई प्रकार के विरोधों का सामना करना पड़ा- परन्तु बाद में सम्मेलन अपने उद्देश्य में सफल रहा। फलस्वरूप समाज में संयम और सादगी के वातावरण का सृजन हुआ था। सम्मेलन का हमेशा से यह प्रयत्न रहा है कि हमारा समाज राष्ट्र की मुख्य धारा में रह कर सत्य, शौर्य, करुणा, सेवा, संयम, सादगी, श्रमनिष्ठ और देशभक्ति का प्रतीक बनें।

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा है- ''विलास विनाश है, विनाश स्वत: नहीं आता विलास के साथ आता है।'' गांधी जी ने हमें संयम, सादगी, करुणा, सेवा, सच्चाई, सरलता, सूचिता को अपनाने की प्रेरणा दी। विश्व शांति, देश की उन्नति और जीवन को सुखी बनाने के लिए गांधी द्वारा बताये गये पथ का अनुशरण करना आवश्यक है।

हमारा समाज विवाह-शादियों में, विभिन्न प्रकार के उत्सव में, पार्टियों में अपने धन को बर्बाद कर रहा है- इससे हमारे समाज की छवि बिगड़ती है और वर्षों से अर्जित हमारी प्रतिष्ठा पर आंच आती है। इस संदर्भ में मैं किसी को दोष नहीं देना चाहता। सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ हम स्वयं आत्मचिन्तन करें और सर्वप्रथम अपने ऊपर प्रयोग करें, स्वयं को आडम्बर और प्रदर्शन से दूर रखें। अपने परिजनों को भी आडम्बर और प्रदर्शन से दूर रहने की सलाह दें।

हमारे समाज पर विहंगम दृष्टि डाले तो यह समझते देर नहीं लगेगी कि समाज के अधिकांश लोग जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं से वंचित रह जाते हैं। वे और उनके परिवार के लोग शिक्षा, स्वास्थ्य एवं जीवन की अन्य आवश्यकताओं के लिए जितने रुपयों की आवश्यकता होती है, आर्थिक अभाव के कारण उतने रुपये वे जुटा नहीं पाते। कहने का तात्पर्य यह है कि जब हमारे पास अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पूरा धन उपलब्ध नहीं है तो ऐसी स्थिति में हम आडम्बर और प्रदर्शन में धन खर्च करने की बात कैसे सोच सकते हैं। आवश्यकता है कि हम आडम्बर और प्रदर्शन में रुपया खर्च नहीं करें, अपने धन को बचायें और उस बचे हुए धन को अपने परिवार, समाज और देश के विकास में खर्च करें।

विवाह-शादी एक शुभ मंगलबेला है जहां पर दो परिवारों का प्रेम भरा मिलन होता है। इस महत्वपूर्ण शुभ मंगलबेला पर श्रम से संचित धन को आडम्बर एवं प्रदर्शन में बर्बाद करना उचित नहीं है। अपनी कमाई का एक-एक पैसा बचाकर नये स्कूल, कॉलेज एवं अस्पताल के निर्माण में तथा वैज्ञानिक अनुसंधान और तकनीकी अन्वेषण में विनियोग हो। ऐसा करने से देश की अनेकों समस्याओं का समाधान हो सकेगा और हमारा समाज अपने पूर्व गौरव एवं प्रतिष्ठा को अक्षुण्ण रख सकेगा।

हमें यह यदा स्मरण रखना होगा कि सादगी, संयम, सच्चाई और सरलता आदि नैतिक मूल्यों को खोकर हम अपने विकास एवं सारे देश के विकास को गति प्रदान नहीं कर सकते हैं।

विवाह का संबंध युवक युवतियों से हैं। हमारे युवक और युवतियों को आगे आकर इसका नेतृत्व संभालना होगा और बिना दहेज के सादगी एवं संयम के साथ अपने विवाह समारोह सम्पन्न करने का संकल्प करना होगा। हमारे युवा वर्ग में नेतृत्व के गुण हैं। यौवन के दिनों से ही समाज के लिए कुछ शुभ कार्य करने का संकल्प करें। सेवा के कंटीले मार्ग पर चल कर समाज में व्याप्त विषमताओं एवं जड़ताओं को समाप्त कर अन्याय और अत्याचार का प्रतिकार करने का प्रयत्न करें।

आडम्बर और प्रदर्शन के अलावा व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा की दौड़ में अपने उद्योग-धंधों को बचाने, अपनी आजादी को अक्षुण्ण रखने, साम्प्रदायिक सौहार्द कायम करने और अपनी पीढ़ी को पश्चिम सभ्यता की ओर उन्मुख होने से बचाने जैसे ज्वलन्त प्रश्नों का हमें सही समाधान प्रस्तुत करना होगा। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के साथ खुली स्पर्धा हमारे उद्योग-धंधों पर बुरा असर डाल रही है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां हमारे पूरे बाजार पर कब्जा करने की दृष्टि से गुणवत्ता के साथ कम दाम वाले सामान उपभोक्ता के लिए हमारे बाजार में उतार रही है, जिसका प्रभाव छोटी-छोटी घरेलू दुकानों पर भी पड़ने की सम्भावना है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के साथ प्रतियोगिता की दौड़ में अपने उद्योगों को संकट से उबारने के लिए 'लो प्राइस हाई क्वालिटी' की नीति अपनानी होगी एवं साथ ही स्वदेशी वस्तुओं का अधिकाधिक मात्रा में इस्तेमाल करना होगा।

आवश्यकता इस बात की है कि औद्योगिक क्षेत्र में आधिकारिक शोध हो, नई उन्नत तकनीक का विकास हो, व्यवसाय, प्रबन्धपटुता, व्यवसायिक निपुणता, चरित्र की सच्चाई और दूरदर्शिता हमारे समाज को दिखानी होगी, जिससे हमारा समाज अधिकाधिक समृद्ध बनकर विश्व के नये क्षितिज पर अपनी प्रभा से ज्योतिर्मय हो सके।

आज की परिस्थिति में हमें अपनी आजादी को अक्षुण्ण रखने के लिए यह आवश्यक है कि हम विभिन्न प्रकार की सैनिक शिक्षा एवं रण कौशल में निपुण हो एवं हम सब देश की आवश्यकता के अनुसार हर तरह की कुर्बानियों के लिए सदैव प्रस्तुत रहें।

साम्प्रदायिक सौहार्द कायम करने की दृष्टि से प्रत्येक भारतीय नागरिक को अपने आत्मनिरीक्षण के द्वारा समभाव और एकता की भावना को अपने अन्तर्मन में स्थान देते हुए साम्प्रदायिक सौहार्द कायम करने का प्रयत्न करना होगा।

आज हमारे देश की महान भारतीय संस्कृति की गरिमा पर भी खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। हमारी नई पीढ़ी का द्रुत गति से पश्चिम की संस्कृति की ओर झुकाव इस बात का द्योतक है। यहां तक कि हमारी वेश-भूषा, कला, रहन-सहन, आचार-विचार सब बदलने लगे हैं। ऐसी परिस्थिति में हम कभी नहीं भूलें कि हम मूलतः भारतीय हैं। अपने बच्चों को भारतीय संस्कृति, साहित्य, कला, खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा के विषय में बतायें। हम अपने त्यौहारों को उत्साहपूर्वक मनाकर अपनी संस्कृति को जागृत एवं सर्वग्राही बनाने का प्रयत्न करें।

प्रश्न तो सदैव रहते हैं- और उनका सही समाधान हमारी बुद्धिमता, श्रमशीलता और प्रतिभा पर निर्भर है। आवश्यकता है हम उठें, जागें, सोचें, समझें और दूरदर्शिता से कार्य करें। अन्यथा देश की उन्नति के विषय में हमने जो सपने संजो रखे हैं, वो कभी पूरे नहीं हो सकेंगे और उसका फल कितना भयावह होगा यह आप स्वयं अंदाज लगा सकते हैं। हम ऐसा वातावरण समाज में तैयार करने का प्रयत्न करें जिससे सारा समाज देश एवं समाज के विकास को प्राथमिकता देना प्रारम्भ कर दें।

आज के संदर्भ में राष्ट्र निर्माण और सामाजिक उत्थान का सुनहरा क्षण हमारे समक्ष है। आवश्यकता है समाज और राष्ट्र के निर्माण में हम अपनी श्रमनिष्ठा से, ईमानदारी से, चारित्रिक दृढ़ता से, नैतिकता से, साम्प्रदायिक सौहार्द से, सद्व्यवहार से, व्यवसाय से, प्रबन्धपटुता से एवं कुशल नेतृत्व से समाज के उत्थान और भारत को विकासशील, शक्तिशाली एवं समृद्ध बनाने की दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

— — — —●●●●— — — —

लाभ और भोग नहीं ; त्याग और सामाजिक कल्याण

आज की औद्योगिक सभ्यता देश या जाति या भाषा पर ठहरी हुई किन्हीं दीवारों को सहन नहीं कर सकती। क्योंकि वे दीवारें उसकी प्रगति में बाधक बनती हैं। वह तो केवल मानवता के ही आधार पर ठहरना चाहती है।

पाश्चात्य देशों में जो संघर्ष का वातावरण है, वह मेरी समझ में इसी कारण से है कि अपनी पुरानी विचार परम्परा के अनुसार वहां लोग इस प्रकार की दीवारों को बनाये रखना चाहते हैं, जबकि उनकी औद्योगिक सभ्यता उसके अन्दर शान्त रहकर प्रगति नहीं कर सकती। दीवारें टूटती हैं और उनके टूटने के बाद ही इस औद्योगिक सभ्यता की धार अबाध किन्तु शान्त रूप से प्रवाहित हो सकेगी।

हमारे संस्कृति ने उन दीवारों को कभी महत्व ही नहीं दिया। अतः मैं तो यही समझता हूं कि यदि हम अपने समाज और देश में उन सब अन्यायों और अत्याचारों की पुनरावृत्ति नहीं करना चाहते, जिनके द्वारा आज के सारे संघर्ष उत्पन्न होते हैं, तो हमें अपनी ऐतिहासिक नैतिक चेतना या संस्कृति के आधार पर ही अपनी आर्थिक व्यवस्था बनानी चाहिए, अर्थात् उसके पीछे वैयक्तिक लाभ और भोग की भावना प्रधान न होकर वैयक्तिक त्याग और सामाजिक कल्याण की भावना ही प्रधान होनी चाहिए। हमारे प्रत्येक देशवासी को अपने सारे आर्थिक व्यापार उसी भावना से प्रेरित होकर करने चाहिए।

जीवन के विविध पक्षों और आधुनिक युग की अनेक समस्याओं का व्यंग्यात्मक विवेचन –

कॉफी हाउस की टेबल से

✍ बुधमल शामसुखा, भूतपूर्व अध्यक्ष, दिल्ली प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन

जी हां, यह कॉफी हाउस है। बुद्धिजीवियों का संगमस्थल। बातवीरों का रंगमंच। प्रगतिशील समाज की मिलनस्थली। व्यापार कुशल कन्वैसरों का जमघट। थके-मांदे क्लर्कों की आरामगाह। शिक्षित बेकारों का विस्मृति-साधन। असफल प्रेमियों का मनबहलाव। कवियों का प्रेरणा पुंज, लेखकों का भाव संग्रहालय और स्वयम्भू नेताओं का सन्तोष-केन्द्र।

कॉफी हाउस की हर टेबल नई ज्ञान ज्योति से उजागर है, हर कुर्सी प्रज्ञापिण्ड नौजवानों से आबाद है, हर कोना जीवन की गहन समस्या-समाधान में व्यस्त है। यहां के हर 'बेयरा' का अपने ग्राहक से 'पर्सनल टच' (व्यक्तिगत सम्पर्क) है, उसकी 'पोजीशन' से वह परिचित है, उसकी जेब में छिपी 'टिप' के प्रति आस्थावान है। उसके मुख के भाव उसके अन्तर्मन का दर्पण हैं, उसकी तत्परता उसे अर्थ-ज्ञान का प्रतीक है।

जीवन का कोई क्षेत्र नहीं, मन का कोई भाव नहीं विश्व का कोई विषय नहीं, देश-विदेश की कोई समस्या नहीं- जिसका गहन-गम्भीर विवेचन कॉफी हाउस में न होता हो। यह बात दूसरी है कि आदमी को मायूस नहीं होना चाहिए। हर गम्भीर चर्चा के बीच कुछ न कुछ चुहल अवश्य होना चाहिए। विषयान्तर से ही मूल विषय समझा जा सकता है, अत: चर्चा का क्रम टूटता रहे, जुड़ता रहे, यही जीवन का 'डायनेमिक' (प्रावैगिक) दृष्टिकोण है।

कॉफी प्रेमी जीवन के इसी गतिशील दृष्टिकोण को लेकर चलता है। अखबार की हर कतरन पत्र-पत्रिकाओं का हर लेख, विश्व के हर कवि की सद्य: प्रकाशित रचना का अटपटा शीर्षक आदि सब सूचनाओं का कॉफी हाउस इन्फॉरमेशन ब्यूरो (सूचनालय) है। मानो ज्ञान गंगा के पावन स्रोत का यहीं उद्गम है, विश्व की हर विस्मृत-संस्कृति का इतिहास यहीं दोहराया गया है, राजनीति का हर सिद्धांत यहीं निर्मित हुआ है, और समाज विकास का प्रत्येक पहलू सर्वप्रथम अपने मौलिक रूप में कॉफी हाउस में ही जन्मा है।

कॉफी प्रेम से कुछ अपरिचित नहीं। विश्व के राजनेताओं की बीती हुई सात पीढ़ियों का लेखा-जोखा वह दे सकता है। प्रतिनिधि कवियों के प्रणय व्यापार की मधुर कथा वह बतला सकता है। आपके मित्र के गहन व्यक्तिगत रहस्य का उद्घाटन वह कर सकता है, भाग्य-लिपि के लेख वहां पढ़े जाते हैं, सेक्स (काम) की उलझनें वहां सुलझाई जाती हैं, और दकियानूसी ख्यालात वहां दुतकारे जाते हैं। शर्त यह है कि कॉफी हाउस के सत्य और मिथ्या के मापदण्ड को आप मान कर चलें। अर्थात् जो पकड़ में न आए उस समस्त छूट को आप सत्य समझ लें। बाद ठीक है-

''सत्य मिथ्या की जगत में, माप मन की भावना है।''

कॉफी हाउस ज्ञान धाम है। आपके सीमित ज्ञान का असीम विकास यहीं सम्भव है। अगर आप धर्म का सही मर्म जानना चाहते हैं तो कॉफी हाउस में चले आइए। संस्कृति की परिभाषा समझनी हो तो टेबल पर तशरीफ रखिये। समाज विकास के पहाड़े दोहराने हों तो 'एक कप कॉफी' का साथ दीजिए। विश्व राजनीति की पेचीदगी हल करनी हो तो हॉट काफी 'सिप' कीजिए और जीवन का सत्य ग्रहण करना हो तो कम से कम लगातार तीन चार कप पीते चले जाइये। आखिर भूगोल खगोल, स्वर्ग नर्क, लोक आलोक, दर्शन विज्ञान सब कुछ मनुष्य के मस्तिष्क ही की तो उपज है। यह मनुष्य का मगज ही तो है जो सृष्टि की हर घटना को देख-परख कर उसे उपयोगी या अनुपयोगी घोषित करता है। फिर डरते क्यों हैं? कॉफी का कप लीजिए सारा ज्ञान साक्षात् रूप धर कर सामने चला आयेगा। ज्ञान तन्तुओं के उत्तेजना से ही समस्याओं का समाधान सम्भव है और कॉफी ही वह हेमगर्भा की मात्रा है जो मुर्दा बुद्धि में भी संजीवन भर देती है। आप मानें या न मानें यह सत्य है कि कॉफी ही बुद्धिजीवियों का सोमपान है, कॉफी हाउस ही आधुनिक ऋषियों का परम पावन आश्रम है फलत: जीवन की गम्भीरतम गुत्थियों का समाधान कॉफी हाउस में ही हो सकता है।

कॉफी हाउस की हर टेबल पर आप मेरे साथ चलिए, आपके ज्ञान-चक्षु खुलते चले जाएंगे। आप पाएंगे कि मानव मस्तिष्क की ऐसी विचित्र और विशाल (प्रयोगशाला) लेबोरेटरी बेमिसाल है। हर टेबल आपकी प्रतीक्षा कर रही है। कुर्सी पर बैठा हर साथी आपके स्वागत को तैयार है? आपके मन का अहंकार यहां आकर तुष्ट होगा, आपके ज्ञान की तपन बुझ जाएगी और आप सचमुच रिफ्रेश्ड (तरोताजा) होकर बाहर निकलेंगे।

तो तय रही कि आप हर रोज मेरे साथ कॉफी हाउस में आयेंगे। हम कुछ अकथनीय कहेंगे, अकरणीय करेंगे, अघटनीय देखेंगे और जिन घटनाओं को आप साधारण समझ कर नजरअन्दाज करते हैं उनका रहस्य खोलेंगे। कॉफी भी पीयेंगे, बातें भी करेंगे और अब फिर मिलने की प्रतीक्षा भी करेंगे।●

गजल

- श्रीमती कोमल अग्रवाल
जूनागढ़ (उड़ीसा)

जिन्दगी जैसी तमन्ना थी नहीं कुछ कम है,
हर घड़ी होता है अहसास कहीं कुछ कम है,
घर की तस्वीर तसव्वुर में ही हो सकती है,
अपने नक्शे के मुताबिक ये जमीं कुछ कम है
बिछड़े लोगों से मुलाकात फिर कभी होगी,
दिल में उम्मीद तो काफी है यकीं कुछ कम है।
अब जिधर देखिए लगता है इस दुनिया में
कहीं कुछ चीज ज्यादा है कहीं कुछ कम है।
आज भी है तेरी दूरी ही उदासी का सबब,
ये बात अलग है कि पहली सी नहीं कुछ कम है।

Mironda Trade & Commerce Pvt. Ltd.

Time Well (HK) Pvt. Ltd.
Malvika Commercial Pvt. Ltd.
Mercury International
Touch Stone Exports

Tower House, 2A Chowringhee Square,
Kolkata- 700069, India.

Phone : (91-33) 2248-3789/2210-8543/
2242-9002

Fax : (91-33) 2248-2856

Email : mercintl@yahoo.com,
cal@touchstone exports.com

अपने को पहचानो

✍ पुष्करलाल केडिया, कलकत्ता

अपने जीवन से निराश हो चुका एक जवान व्यक्ति समुद्र के किनारे चट्टान पर बैठा, समुद्र की बनती-मिटती तेज लहरों को टकटकी लगाकर देख रहा था और उसके मन में बार-बार यही विचार उठ रहे थे कि वह भी अपने जीवन की लीला समाप्त कर इन्हीं लहरों में मिल जाय, जो बार-बार उन चट्टानों से अपना सिर टकराकर चली जा रही है।

अचानक एक अदृश्य शक्ति ने विराम लगा दिया उसके इस चिन्तन पर। विराम लगाने वाली शक्ति और कोई नहीं- उसकी स्वयं की आत्मा थी। आत्मा उसके मन के विचारों को जानती थी। उसके जीवन की सारी घटनाओं को उसने करीब से देखा है। आत्मा ने कहा- ''तुमने अपनी दोनों आंखों से बाहर को ही देखा है। अपनी तीसरी विवेक की आंख को काम में कभी लिया ही नहीं। इसी कारण तुम भटक गये, जीवन की वास्तविकता से।'' तुमने सुना होगा कि मानव में वह सब कुछ है, जो इस ब्रह्माण्ड में है। यदि तुम अपनी तीसरी आंख से देखते तो तुम्हें यह अनुभव होता। उसकी उत्सुकता बढ़ी। उसने आत्मा से उन शक्तियों का बोध कराने का आग्रह किया।

आत्मा ने उसकी जिज्ञासा पर उससे पूछा- ''तुम सोना चांदी एकत्र करना चाहते थे न ? देखो, परमात्मा ने अपनी सर्वोत्तम कृति मनुष्य को सोने चांदी से क्यों नहीं बनाया। क्या तुमने सोना चांदी में कोई चीज उपजती देखी है ? इंसान को मिट्टी से बनाया गया। मिट्टी में उर्वरा शक्ति है। एक से अनेक पैदा करने की शक्ति है, मिट्टी में।'' भारत को सोने की चिड़िया क्यों कहा जाता है ? इसीलिए क्योंकि इसकी मिट्टी से उपजे अनाज, सब्जियां, कपास, फल-फूल, खनिज आदि की आय से सोना खरीदा जा सकता है। इन वस्तुओं को सोने के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। तुम्हें अपनी उर्वरा शक्ति की पहचान नहीं।

आत्मा ने उसे एक गम्भीर रहस्य समझाते हुए कहा- ''मेरा सीधा सम्पर्क परमात्मा से है। जिस तरह कम्पास की सूई पर लगी हुई चुम्बक समतल स्थान पर रखते ही, उत्तर दिशा दर्शाती है, ठीक उसी तरह शांत और एकाग्र मन रहने पर मेरा सीधा सम्पर्क परमात्मा से हो जाता है। हजारों किलोमीटर दूर स्थित चुम्बकीय चट्टानें इस छोटी सी नोक को अपनी ओर खींच लेती है। लेकिन कम्पास असंतुलित (अनबैलेंश) होने पर अर्थात् हिलने-डुलने पर काम नहीं करता। मनुष्य जरा-जरा सी बातों में अस्थिर हो जाता है। जीवन की छोटी-छोटी बातें उसको स्थिर नहीं रहने देती और उसी कारण मेरे माध्यम से वह परमात्मा का बोध नहीं कर पाता।''

आत्मा ने जीवन के अन्य रहस्यों की परत खोलते हुए बताया- ''तुम सबसे शक्तिशाली पांच तत्वों से बने हो- मिट्टी, जल, अग्नि, आकाश एवं वायु। समय-समय पर तुम्हें इन शक्तियों का बोध अवश्य होता है। भूकम्प, अथाह वर्षा, दावानल, आकाशीय शक्तियों का चमत्कार, गरजना और चक्रवात तूफान आदि। इन्हीं अथाह शक्तियों के भण्डार हो तुम।''

ग्रहों द्वारा प्रदत्त शक्तियों की जानकारी तुम्हें नहीं है। सूर्य आत्मा फूंकता है, चांद मन देता है, मंगल रक्त का संचालन करता है, बुध देता है कल्पना शक्ति, बृहस्पति देता है ज्ञान, शुक्र तेज और काम वासना तथा शनि देता है सुख-दुख की अनुभूति। काश, तुम इन ग्रहों द्वारा प्रदत्त शक्तियों को पहचान कर इनका उपयोग कर पाते।

तुमने कल्पवृक्ष का नाम सुना है, पर कभी यह नहीं सोचा कि परमात्मा ने तुम्हें कल्पना चिन्तन की मशीन प्रदान की है। चिन्तन-मनन एवं कल्पना के सहारे तुम कुछ भी करने में समर्थ हो। लोग प्राकृतिक मानसरोवर जाते हैं, पर मस्तिष्क में जो मानव सरोवर है, उस ओर तुम्हारा ध्यान गया ही नहीं। इस २५० ग्राम तरल द्रव्य की मानव सरोवर में १३ अरब न्यूरान्स है, जो मस्तिष्क एवं शरीर का संचालन करते हैं। तुम्हारे मस्तिष्क में एक अरब बिजली की तरह ऑन-ऑफ स्वीच है, जो शरीर की हर गति का संचालन करते हैं।

तुमने सुना होगा कि भगवान क्षीरसागर में रहते हैं, यह क्षीरसागर क्या है ? जब बच्चा जन्म लेता है। मां की कोख में अपने आप इस क्षीर (दूध) का प्रवाह बह उठता है। जब बच्चा अन्न ग्रहण करना शुरू करता है, तब यह दूध मां की कोख में बनना स्वत: बन्द हो जाता है। यही असली क्षीरसागर है। ईश्वर की सभी क्रियाओं में इस तरह के रहस्य छिपे हुए हैं।

तुम परमात्मा की प्रार्थना करते हो, ''त्वमेव माता च पिता त्वमेव। त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव-देव।'' तुम्हें प्रार्थना करते समय ईश्वर की आंखों में स्वयं के दर्शन करने हैं और इस प्रार्थना से यह समझना है कि तुम्हें माता-पिता, भाई-बन्धु, सखा-दोस्त अपने ज्ञान एवं संसाधन आदि का सही रूप में उपयोग करना है।

आत्मा ने उसे उसके भटक जाने सम्बन्धी एक उदाहरण दिया- एक आदमी एक बड़े मकान के सामने पहुंचा तो देखा कि मकान के बाहर मुख्य द्वार पर लिखा हुआ था, ''अन्दर आओ।'' अन्दर चला गया तो फिर लिखा मिला कि अब दाहिनी ओर जाओ, जब दाहिनी ओर गया तो आगे जाकर देखा कि एक सूचना बोर्ड पर लिखा था, ''अब ऊपर जाओ''। वह ऊपर चला गया। वहां जाकर देखा तो लिखा मिला की सीधे जाकर फिर बायें घूम जाओ। बायें जाने पर एक बड़े कमरे में पहुंच गया। वहां लिखा मिला, ''क्यों इधर-उधर भटक रहे हो ? यह अमूल्य जीवन इधर-उधर भटक कर समाप्त करने के लिए नहीं है। जीवन की सही दिशा को पहचानो।''

आत्मा ने उसे समझाते हुए कहा कि शरीर वैज्ञानिकी के अनुसार शरीर में लगा मशाला १०० रु. से अधिक का नहीं है। आत्मा ने बताया कि मनुष्य शरीर में :-

इतनी शक्कर है - जिससे १०-२० कप चाय मीठी हो सकती है।
इतना चूना है - जिससे दो-तीन हाथ लम्बी दीवाल पोती जा सकती है।
इतना लोहा है - जिससे एक इंच लम्बी कील बन सकती है।
इतना मैगनेशियम है - जिसे छः मोटी तस्वीरों में रंग भरा जा सकता है।
इतना पोटेशियम है - जिससे बच्चों की बन्दूक का एक पटाखा बन सकता है।
इतना गंधक है - जिससे एक जूं मारी जा सकती है।
इतना फासफोरस है - जिससे बीस माचिस बॉक्स बन सकते हैं।
इतना चर्बी है - जिससे एक दर्जन साबुन बार बन सकते हैं।
इतना तांबा है - जिससे एक पैसा ढाला जा सकता है।
इतना पानी है - जिससे एक-दो माह के शिशु को नहलाया जा सकता है।

आत्मा ने आगे कहा भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को विराट स्वरूप दिखलाकर शरीर में लगी विराट मशीनों एवं यंत्रों की जानकारी कराई।

मस्तिष्क: संगणक एवं नियंत्रण--यंत्र (कम्प्यूटर)
हृदय : उद्वहन यंत्र (पम्पिंग यंत्र)
फेफड़ा : श्वसन यंत्र (एक्झास्ट फैन)
पेट : पाचन यंत्र (भट्टी)
स्नायु : संवाद-प्रेषण एवं नियंत्रण यंत्र (वैद्युतिक तारों का जाल)
त्वचा : विलक्षण कवच एवं स्पर्श यंत्र (कवच)
गुर्दे : शोधक यंत्र (रिफाइनरी)
अस्थि : ढांचा (स्ट्रक्चर)
हाथ : भारोत्तोलन यंत्र (क्रेन)
पैर : यंत्र (पहिये)
नाक : घ्राण यंत्र
दांत : चर्वण यंत्र (चक्की)
जीभ : आस्वादन यंत्र (लेबोरेटरी)
मुंह : ध्वनि-विस्तारक यंत्र (लाउड स्पीकर)
आंख : दृश्य-ग्रहण यंत्र (मूवी कैमरा)
कान : श्रवण यंत्र (राडार)
कर्म : मानव में देवत्व (सत्प्रवृत्तियां)
कर्म : मानव में पशुत्व (दुष्प्रवृत्तियां)

आत्मा ने उसे समझाते हुए बताया कि शरीर के भीतर की जानकारी आज वैज्ञानिक युग में एक्सरे, अल्ट्रासोनोग्राफी, ई.सी.जी. इकोकार्डियोग्राम, एमआरआई, आदि विराट अनेकानेक मशीनों से की जाती है। पर यह मशीनें शारीरिक व्याधियों को ही दर्शाती हैं, शरीर के अन्दर छिपी अदृश्य शक्तियों को नहीं।

आत्मा ने कहा- ''भगवान ने सबको अनमोल शक्तियां प्रदान की है, पर तुम्हें इसके उपयोग के बारे में स्वयं समझना है। तुम उसका दुरुपयोग करो या सदुपयोग तुम्हारी मर्जी है, इसका परिणाम अच्छा या बुरा तुम्हें ही भुगतना पड़ेगा।

हमारे ऋषि मुनि बाहर की आंख बंद कर भीतर की आंख से ही चिन्तन मनन किया करते थे। जिसने भी इस त्रिनेत्र से चिन्तन मनन किया वह छलांग लगा गया। किसी में ज्ञान की कमी नहीं है। कमी है तो उसके क्रियान्वयन की।

उस जवान को आत्मा द्वारा उसे स्वयं को पहचानने का ज्ञान प्राप्त हुआ और उसने नई जिन्दगी प्राप्त की, इस आत्म-ज्ञान से।●

नींद से जागो

नींद से जागो ए जवानों
घड़ी नहीं है सोने की,
जगा रहा है नया जमाना
बात करो कुछ करने की।

भोग-विलास में डूब गए तो
जीवन भर पछताओगे,
नहीं हाथ कुछ आएगा
जब वृद्धावस्था पाओगे।

बदल दो उन रिवाजों को
जिन पर खोखला समाज है।
बदल दो उस समाज को
जहां दौलत का रिवाज है।

तुम चाहो तो चांद को
धरती पे उतार सकते हो
तुम चाहो तो हथेली पे
सरसों भी उगा सकते हो।

कुछ ऐसी मिसालें दो
आने वाला कल तुम्हें याद करे,
वीर शिवाजी औ प्रताप को
श्रेणी में तुम्हें आबाद करे।

लहू को लहू पुकार रहा है
आज इस कर्मभूमि में,
दूध की कीमत चुकानी है
तुम्हें अपनी जन्म भूमि में।

कर्म को ही धर्म समझकर
चलते चलो अपनी डगर,
यह मत सोचो क्या खोओगे
क्या पाओगे इस पथ पर।

एक बार यदि चल पड़ो,
पीछे मुड़ नहीं पाओगे,
चलने का जोश और ही है
मंजिल को सामने पाओगे।

- सुशील कुमार मोहता, समस्तीपुर

इस राष्ट्ररूपी कृष्ण के विश्वास की कसौटी पर खरे उतरें

✍ बंसीलाल बाहेती, कलकत्ता

महाभारत का युद्ध समाप्त हो गया था तथा पांडवों से विदा होकर श्रीकृष्ण जब द्वारका लौट रहे थे तो अनेकों दु:खद प्रसंग उन्हें उद्वेलित कर रहे थे। कौरवों के साथ पांडवों का भयंकर युद्ध जिस स्तर पर हुआ था उससे सारी सामाजिक व्यवस्था बिखर गई थी। युद्ध ने असंख्य लोगों को मौत का ग्रास बना लिया था- अब पीछे रह गए थे बाल-वृद्ध एवं अबलाएं। श्रीकृष्ण समझ नहीं पा रहे थे कि इन सब के भरण-पोषण और सम्मान की व्यवस्था को पांडव कितनी सफलता से निभा पाएंगे। अपने तमाम प्रयासों के बावजूद श्री कृष्ण दुर्योधन को समझा नहीं पाए और युद्ध अनिवार्य हो गया। इसी चिन्ताग्रस्त स्थिति में वे रेगिस्तान के रास्ते से गुजर रहे थे कि रास्ते में उन्हें मुनि श्रेष्ठ उत्तंक ऋषि के दर्शन हुए। मुनि श्रेष्ठ संसार की घटनाओं से बेखबर थे। उन्हें नहीं मालूम था कि महाभारत का भयंकर युद्ध हो गया और असंख्य लोग मारे गये। उन्होंने स्वाभाविक तौर से श्रीकृष्ण से हस्तिनापुर की कुशलता और कौरव-पांडवों के बीच स्नेह-व्यवहार के बावत पूछा। पितामह भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य, कुल गुरु कृपाचार्य आदि श्रेष्ठजनों की कुशलता के बारे में भी जिज्ञासा जाहिर की। इस प्रकार के प्रश्न की कल्पना तक श्रीकृष्ण को नहीं थी। वे प्रश्न सुनकर घबड़ा गए। कोई उत्तर नहीं बना। परन्तु यथाशीघ्र संयत होकर श्रीकृष्ण ने कहा कि कौरवों की हठवादिता के कारण महायुद्ध टाला नहीं जा सका और युद्ध में तमाम कौरव एवं दोनों पक्षों के लोग मारे गए।

यह सुनकर उत्तंक मुनि का क्रोध भड़क गया, उनकी आंखें लाल हो गई - होंठ फड़कने लगे और भृकुटी तन गई। उन्होंने श्रीकृष्ण को बुरी तरह लताड़ा - बहुत बुरा भला कहा और हर तरह से उनकी भर्त्सना की। उन्होंने सारा दोष श्रीकृष्ण पर लगाया और पूछा कि "बासुदेव, तुम्हारे रहते यह घोर अन्याय क्यों हुआ ? क्यों नहीं तुमने इस महायुद्ध को टालने का प्रयास किया- क्यों नहीं तुमने कौरवों एवं असंख्य लोगों की रक्षा की।" मुनि श्रेष्ठ उत्तंक ऋषि को लगा कि निश्चय ही श्रीकृष्ण कौरवों के नाश का कारण बने होंगे। वे इतने क्रोधित हो रहे थे कि इस तमाम घटनाक्रम के लिए उन्हें श्रीकृष्ण ही दोषी नजर आ रहे थे। श्रीकृष्ण समर्थ थे और यह उनका दायित्व था कि इतने बड़े अनर्थ को उन्हें रोकना चाहिए था। उत्तंक ऋषि ने इस अपराध के लिए श्रीकृष्ण को शाप देने का निश्चय कर लिया।

मुझे लग रहा है देवलोक से कोई उत्तंक मुनि इस भयंकर परिवर्तन को देख रहे हैं और इस जातीय गौरव को कुंठित और हतप्रभ देखकर उतने ही रोष के साथ अभिव्यक्ति कर रहे हैं कि यदि अभी भी हमने इस राष्ट्र की अर्थव्यवस्था और सार्वभौमिकता की सुरक्षा के लिए अपनी प्रभावशाली भूमिका का निर्वाह नहीं किया तो संभवत: पूरा देवलोक हमें शापित कर देगा।

श्रीकृष्ण तो स्वयं भगवान स्वरूप थे। उत्तंक मुनि के क्रोध को शाप में परिवर्तन करने से रोकने में वे सफल हो गए, क्योंकि उन्होंने अन्याय और पाखण्डवाद को समाप्त किया था। उत्तंक मुनि को सच्चाई दर्शाने की उनमें क्षमता थी और इसी लिए ज्ञानचक्षु प्रदान कर श्रीकृष्ण ने जब मुनि श्रेष्ठ को दिखाया कि कौरव किस प्रकार अपना विवेक खो चुके थे, राजसत्ता के मद में आकर उन्होंने किसी की बात नहीं सुनी, अधर्म का भूत उन पर सवार था और इसी कारण वे अपना हठ नहीं छोड़ते थे, युद्ध की आग में वे स्वयं ही कूदे और नष्ट हुए तब मुनि उत्तंक आश्वस्त हुए कि श्रीकृष्ण ने कर्त्तव्य का निष्ठा के साथ पालन किया। लेकिन हम यदि अपने कर्त्तव्य पालन में खरे नहीं उतरे तो हालात हमारे अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगा देगी। हमारे पास ज्ञान चक्षु नहीं है जो दूसरों को हमारे निष्ठावान होने का सबूत दे सकें। हमें तो पूरी ईमानदारी से अपनी सार्थक भूमिका का निर्वाह करना होगा और खतरों से बचाते हुए समाज को विकास की ऊंचाइयों पर पहुंचाना होगा।

मुनि उत्तंक के मन में क्रोध का कारण था कि विश्व व्यवस्था की पवित्रता पर इतनी बड़ी चोट हो गई और स्वयं बसुदेव उसकी रक्षा क्यों नहीं कर पाए। उनकी निष्ठा मूल्यों के प्रति थी, उनकी निष्ठा व्यवस्था के मापदण्डों के प्रति थी और उनकी इसी पवित्रता और निष्ठा के कारण श्रीकृष्ण ने मुनि उत्तंक को अपना विश्वरूप भी दिखाया। श्रीकृष्ण ने मुनि उत्तंक से वरदान मांगने का आग्रह किया। किन्तु मानवता के कल्याण में रत्त मरूभूमि में घूमने वाले मुनि श्रेष्ठ ने अपनी मर्यादा के अनुकूल सिर्फ इतना ही वरदान मांगा कि प्यास बुझाने के लिए जब भी और जहां कहीं भी जल की आवश्यकता हो वहीं उन्हें जल प्राप्त हो जावे।

लेकिन विडम्बना देखिए, जिस दिन इस प्रकार जल प्राप्ति के लिए मुनि उत्तंक ने श्रीकृष्ण का स्मरण किया तो देवराज इन्द्र को जल पिलाने श्रीकृष्ण ने मुनि के पास भेजा। देवराज इस शर्त पर राजी हुए कि वे मुनि के पास चाण्डाल भेष में जाएंगे। श्रीकृष्ण को भरोसा था कि मुनि अपने ज्ञान के बल पर देवराज को पहचान लेंगे। किन्तु देवराज को चाण्डाल भेष में मुनि पहचान नहीं पाए और जल ग्रहण करने से इनकार कर दिया। श्रीकृष्ण मुनि के सामने प्रकट हुए और सारी स्थिति स्पष्ट की। उन्होंने विनम्रता से मुनि उत्तंक को कहा कि आपने अपने ज्ञान को सुप्त रखा और इसलिए देवराज इन्द्र के सामने मेरी हार हो गई और आप अमृत से वंचित हो गए।

कहीं ऐसा नहीं हो हम इस राष्ट्ररूपी कृष्ण के विश्वास की कसौटी पर कोई भूल कर जावें और अमृत से वंचित हो जावे। अपनी जातीय व्यवस्था के बिखराव को रोकना जितना जरूरी है उतना ही जरूरी है कि उसके आर्थिक विकास एवं सम्मान को बढ़ाना। हम अपने पुरखों के पराक्रम, पुरुषार्थ और पहचान को नई ऊंचाई प्रदान करें - जातीय गौरव और गरिमा को बढ़ाने की हमारी भूमिका का निर्वाह हमें स्वयं करना है। मुझे विश्वास है हमारा समाज मुनि श्रेष्ठ उत्तंक की चिंताओं को ध्यान में रखेगा और अपने समाज के समग्र विकास में जुटेगा किन्तु अमृत पान के अवसर पर मुनि श्रेष्ठ की भूल को नहीं दोहराएगा।●

अन्धविश्वास

✍ ऊषा गुप्ता, भुवनेश्वर

अन्धविश्वास सिर्फ मारवाड़ी समाज, हिन्दू वर्ग या सिर्फ भारतवर्ष में व्याप्त समस्या नहीं है।'यह कमोवेश हर समाज, हर वर्ग, हर देश में व्याप्त है। सदियों से मनुष्य ने अपनी कमजोरियों से बद्ध अंधविश्वासों को अपने जीवन में स्थान दिया है। यहां मैं एक बात स्पष्ट करना चाहूंगी कि अंधविश्वास एवं आस्था में एक बहुत बड़ा विषय भेद है। अंधविश्वासों की जननी आशंकायें हैं जबकि आस्था विश्वास को जन्म देती है। अंधविश्वास आदमी के मानस को कमजोर बनाता है, आस्था उसके हृदय में शक्ति का संचार करती है।

अपने मारवाड़ी महिला समाज में अंधविश्वास की पैठ कुछ अधिक ही गहरी है। उदाहरण स्वरूप जब पूरे भारतवर्ष में चेचक का प्रकोप तक़रीबन एक दशक से लुप्त हो चुका है फिर भी शीतला-माता की अर्चना बरकरार है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि शीतला माता की आराधना से चेचक के प्रकोप से कुछ क्षीणता आने की संभावनाएं थी। आज जब भारतवर्ष इसके प्रकोप से सम्पूर्ण रूप से मुक्त हो चुका है। इस आराधना को हम अन्धविश्वास की श्रेणी में ही स्थान दे सकते हैं। कुछ वर्ष पहले करोड़ों लोगों द्वारा गणेशजी की मूर्ति को दूध पीलाना एक अत्यन्त हास्यास्पद सामूहिक अन्धविश्वास का बिम्ब था।

''आराधना करने से मंगल होगा- आस्था है। नहीं करने से अमंगल होगा- अन्धविश्वास है।''

अन्धविश्वास को दूर करने का समुचित साधन उपयुक्त शिक्षा ही है। ज्ञानंम परमं मलमं को शिरोधार्य करते हुए शिक्षा से शक्ति एवं शक्ति से अन्धविश्वास से मुक्ति सम्भावित है।

मूलत: अन्धविश्वास नकारात्मक भावनाओं का विम्ब है जबकि आस्था सकारात्मक । अपने समाज में तिथि, वार को अक्सर काफी महत्व दिया जाता है। इस सन्दर्भ में अपने जीवन का एक प्रेरणापरक प्रसंग मैं अपनी पाठिकाओं के साथ बांटना चाहूंगी। सन् १९९०, मेरे श्वसुर कैंसर के रोग से ग्रस्त थे। बम्बई में उनकी शल्य चिकित्सा होनी थी। शल्य चिकित्सा के पहले हृदय की विस्तृत जाचोंपरान्त, हृदय रोग विशेषज्ञ ने उनसे कहा, ''आप शल्य चिकित्सा के लिए दुरुस्त हैं'', फिर मजाक के लहजे में कहा, ''पंचांग देखकर उचित तिथि में अपनी शल्य चिकित्सा करवा लीजिए।'' मेरे श्वसुर का जवाब था डाक्टर, हर दिन सूर्य पूर्व से ही उगता है और दिन सारे ही खुबसूरत होते हैं कैंसर होने के बाद भी यह संवाद, एक दृढ़ मानसिक शक्ति का परिचायक है। जहां जीवन मृत्यु का प्रश्न हो वहां भी किसी अन्धविश्वास को अपनी सोच में स्थान न देना मेरे जीवन का एक बहुमूल्य प्रसंग है।●

यूं न भटकावो

✍ डॉ. दीनदयाल ओझा

नित भुलावों भाषणों में, यूं न भटकावो सतावो।
मानता हूं तुम बड़े हो, और मैं छोटा सदा।
तनिक समझो किस तरह, मैं सह रहा हर आपदा।
और मृग तृष्णा दिखा ना, इस तरह मुझको बुलावो।
नित भुलावों भाषणों में, यूं न भटकावो सतावो।

लाभकारी अब मिटिंगे, हानि के ही काम करबी।
छीन कर अधिकांश सुख वे, नित नये दुख दर्द भरती।
सत्य की अमृत धारा ना, असद् की सरिता बहावो।
नित भुलावों भाषणों में, यूं न भटकावो सतावो।

बस करो झूठा दिखावा, अब बहुत कुछ हो गया।
सारा सारा मनुजमन का, भोग, सुख, धन खो गया।
और अन्तर ताप देकर, इस तरह अब ना भुनावो।
नित भुलावों भाषणों में, यूं न भटकावो सतावो।

ठौर सुमनों की यहां, दुख, शूल जग जन बो रहे।
भोग सुख मद पान धनहित, हम कहीं खो , सो रहे।
कर्ज या कि दान दे, अब तो ययाति ना बनाओ
नित भुलावों भाषणों में, यूं न भटकावो सतावो।

अरण्य रोदन

अब उन्हें या पेड़ से, कहना बराबर हो गया।
देखते पतझड़, अकालों और नित अतिवृष्टियां।
भूख मरते मनुज पशु, घातक कुटिलतम वृत्तियां।
ये चुने नेता सकल, अफसर नहीं सद् सोचते।
चाटुकारों के सिवा ना, अन्य से ये बोलते।
कौन जाने देश का, पौरुष कहां जा सो गया।
अब उन्हें या पेड़ से, कहना बराबर हो गया।

आरूढ़ पद, मद, वाहनों, ये ना किसी को धारते।
रुग्ण, घायल, दीन, दुर्बल, एक ना उपकारते।
ये ययाति तनय का, सर्वस्व ले सुख भोगते।
लूट अन धन दीन का, मोदक सदा आरोगते।
लग रहा तप त्याग का वह, बीज अब जग खो गया
अब उन्हें या पेड़ से, कहना बराबर हो गया।

देखकर ना देखना, इनके मनों को भा गया।
अनसुनी करना सुनी को, सब तरीका आ गया।
नित्य मृगतृष्णा दिखा वे, जगत जन मन छल रहे।
ये चुने दल बल सहित बेखौफ पग पग पल रहे।
कौन इस अमृत धरा विष बीज छल कर बो गया।
अब उन्हें या पेड़ से, कहना बराबर हो गया।

दूध के बदले ले आया आध्यात्मिक आनन्द

✍ सुभाष लखोटिया, नई दिल्ली

सबेरे उठना, तैयार होना और फिर गाड़ी को स्टार्ट करके गाय का दूध लाने के लिए प्रस्थान करना। यह तो रोज का काम हो गया था पिछले छ: महीनों से। पर जब से पेट्रोल के दाम और अधिक बढ़ गए तो सोचा क्यों नहीं सबेरे नौकर को ही दूध लाने भेज दिया जाए। इससे मेरे समय की भी बचत होगी और पैसे भी बचेंगे। सिलसिला शुरू हो गया और जाने लगा नौकर साईकिल पर दूध लाने। दिल्ली में सर्दी का मौसम प्रारम्भ हो चुका था और आज अचानक जब नौकर को दूध लाने की बाल्टी दी गई तो वह बोला कि साहब आज तो बहुत ज्यादा ठंड है और हवा भी तेज चल रही है। तुरन्त मैंने बाल्टी उसके हाथ से ले ली और कहा कोई बात नहीं तुम यहीं रहो हम ही दूध ले आते हैं। कार चला कर ग्वाला के पास गए, दूध सामने निकाला गया और दे दिया गया हमारी बाल्टी में। अब समय था घर की तरफ प्रस्थान करने का। रास्ते में गाजर और मटर बहुत ताज़ा दिखलाई दिए तो सोचा मौसम के हिसाब से ताजा सब्जियां अच्छी रहेंगी और ले लिये घर के लिए मटर और गाजर। इतनी ही देर में पुलिस की गाड़ी आई, सब्जी वाले के दुकान के बाहर रुकी और गाजर का दाम पूछा पुलिस वाले ने। मैं मन ही मन सोच रहा था कि यह दुष्ट पुलिस वाले बिचारे गरीब सब्जी वाले से मुफ्त में ही किलो या दो किलो गाजर और मटर ले जाएंगे और डन्डे का जोर दिखलाएंगे और साथ में दो-चार गालियां भी दे जाएंगे। पर मेरे जीवन का सुखद आश्चर्य तब हुआ जब मैंने देखा कि पुलिस वाले ने गाजर खरीदी और पर्स से पैसे निकाल कर सब्जी वाले को दिए। मैं अपनी गाड़ी स्टार्ट करके चलने ही वाला था पर मैं रुक गया। मैं पुलिस वाले के पास गया और उसके कंधे के ऊपर हाथ रखकर मैंने बड़ी ही आत्मीयता से कहा कि भाईसाहब, आज तो मुझे वास्तव में सुखद आश्चर्य हो रहा है कि आप पुलिस वाले हैं और फिर भी पैसे देकर सब्जी खरीद रहे हैं अन्यथा हम लोगों की तो धारणा यही रहती है कि पुलिस वाले आयेंगे दो-चार डन्डे लगाएंगे और बिचारे गरीब सब्जी वाले से सब्जी मुफ्त में ही ले जाएंगे। तत्पश्चात् मैंने पुलिस वाले को बड़े आत्मीयता से धन्यवाद दिया और उन्हें कहा कि मेरी यह धारण है कि जो कोई अच्छा काम कर रहा है तो उसकी प्रशंसा जरूर करनी चाहिए। पुलिस कर्मी धन्यवाद देता हुआ मस्ती से गाड़ी चलाकर चला गया और मैं उसे देखता रह गया और मेरे मानस पटल पर एक अमिट छाप पड़ गई कि पुलिस वाले ऐसे भी हैं जो मानवता से पूर्ण हैं और केवल धौंस नहीं जमाते हैं।

मैंने गाड़ी की आगे वाली सीट पर दस-बारह मौजे की जोड़ियां रखी थी ताकि उन्हें जरूरत मन्द लोगों के बीच बाट सकूं। सबसे पहले तो मैंने एक मोजे की जोड़ी उस गरीब सब्जी वाले को दी जो सर्दी में चप्पल पहने ठिठुर रहा था। मैंने कहा भईया! तुम मौजे पहनोगे। कुछ सेकेन्ड के लिए तो वह बेचारा बोल ही नहीं पाया मुझे लगता है कि उसे लगा होगा कि उससे इतनी आत्मीयता से बात करने वाले कितने कम लोग हैं। जब मैंने मौजे उस सब्जी वाले को दिए तो प्रसन्नता से सब काम छोड़ कर झटपट उसने नये मौजे पहन लिए। चेहरे पर प्रसन्नता झलक रही थी उसके। मैं गाड़ी के पास पुन: पहुंचा तो रास्ते में देखा कि खाली साईकिल रिक्शा चला आ रहा है। रिक्शा चालक के पास भी मौजे नहीं। मैंने उसको भी मौजे दिए और इस प्रकार अन्य रिक्शा चालक जो उस रास्ते से चले आ रहे थे उन्हें मैं मौजे वितरित करता रहा। सड़क के एक कोने पर मैंने देखा कि एक ३५ साल का नौजवान गेरूवे वस्त्र पहने दुबक कर बैठा हुआ था और उसी के पास उसकी १० या १२ साल की बेटी भी थी। पिता और पुत्री चुपचाप बैठे थे। मैं उनके पास गया और उनसे पूछा कि भईया इतनी सर्दी में तुमने कपड़े भी नहीं पहन रखे हैं और कम्बल क्यों नहीं ओढ़ा तुमने और बच्चो को पढ़ाते हो या नहीं। उसने जवाब दिया कि उसकी पत्नी अन्धी है दो और छोटे बच्चे हैं और कम्बल के लिए पैसे कहां, और पढ़ाई का तो सवाल ही नहीं उठता है। मेरी इच्छा तो यह हुई कि तुरन्त बाजार में जाकर और दो कम्बल लाकर इन्हें भेंट करूं। परन्तु करता क्या लाचारी थी ना सबेरे ८ बजे का समय था। दुकान तो खुली नहीं थी मैंने उस नवयुवक के हाथ में २०० रुपये रखे और कहा कि भईया आज तुम जरूर से दो कम्बल खरीद लाना पर हां कोई भी हालत में इस पैसे को शराब आदि में बरबाद मत करना। आस-पास चाय की दुकान थी। लोग इकट्ठे होकर के देख रहे थे और बोल भी रहे थे कि साहब इसे पैसे मत दो। ये लोग ऐसे ही होते हैं और बरबाद कर देंगे पैसा। मैंने इन बातों की तरफ ध्यान नहीं दिया और पुन: उस व्यक्ति से बोला कि भईया जरूर से तुम अच्छे कम्बल ले आना। मेरा मानना है कि अगर हम १० जगह दान धर्म करते हैं और उसमें से दो-चार व्यक्ति हमारी आत्मीयता का अनुचित लाभ उठाकर हमें धोखा देते हैं और कम्बल आदि के लिए दिए हुए पैसे से शराब आदि पी लेते हैं तो भी हमें दान देना नहीं छोड़ना चाहिए। ऐसी शिक्षा सुप्रसिद्ध साहित्यकार लीयो टॉलस्टाय ने भी दी थी। अब मैं आगे बढ़ा और लाल बत्ती पर गाड़ी रुकी और सामने देखा एक व्यक्ति जिसके पैर नहीं हैं अपनी चार पहिएं की गाड़ी पर भीख मांगने मेरे पास आ गया। मेरी गाड़ी में एक विदेशी चॉकलेट रखी हई थी जिसे मैं अपनी

यूरोप की यात्रा से लाया था और सोचा था कि इसे बड़े चाव से मैं गाड़ी चलाते-चलाते खाऊंगा। परन्तु जब वह व्यक्ति मेरे पास आया तो मैंने अचानक पूरी इम्पोर्टेड टॉफी उसके हाथ में दे दी। उसका चेहरा देखने लायक था। चेहरा तो मेरा भी देखने लायक था क्योंकि मुझे इतना आनन्द आ रहा था उसके चेहरे को देखकर।

अब मैंने प्रस्थान किया घर की तरफ़ तो अचानक मेरे कन्ठ के नीचले हिस्से पर एक अजीब सी अद्वितीय स्वाद का अनुभव हुआ। ऐसा स्वाद जिसकी कभी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता। एक तरफ तो हम करेले, नीम आदि के स्वाद को पहचानते हैं तो दूसरी तरफ रबड़ी, मालपुये और शरबत के स्वाद को भी पहचानते हैं परन्तु जो मुझे अचानक अजीब सी अद्वितीय स्वाद की अनुभूति हुई उसका मैं वर्णन भी नहीं कर सकता। मुझे अचानक लगा कि ऐसे छोटे-छोटे आध्यात्मिक और सेवा के कार्य करने से अगर प्रभु की कृपा होती है तब जाकर ही ऐसे अद्वितीय अवर्णनीय स्वाद की अनुभूति गले के निचले हिस्से में होती है। यह मेरा निजी अनुभव है जो मैंने कई बार किया है इसके लिखने का एक मात्र तात्पर्य यह है ताकि पाठक सेवा भावी, आध्यात्मिक कार्य चाहे छोटे या बड़े करते रहें और प्रभु की असीम कृपा का प्रसाद इस तरह के अद्वितीय पेय पदार्थ के रूप में ग्रहण करें जिसे वर्णित नहीं किया जा सकता केवल अनुभव किया जा सकता है। मुझे तो ऐसा लगा कि जैसे प्रभु के द्वारा सीधे मेरे मुंह में चरणामृत प्रवेश कराया गया है। आप भी संकल्प करें और प्रारंभ करें नि:स्वार्थ सेवा के कार्य, चाहे छोटे अथवा बड़े और आप पाएंगे अद्वितीय आनन्द एवं आध्यात्मिक मस्ती।●

नारी का समुचित सम्मान करें

✍ डॉ. सीताराम गुप्त 'दिनेश' जमशेदपुर

नारी है नर की खान, सदा उसका समुचित सम्मान करें।
जिसकी गोदी में पले हुए, उसका न कभी अपमान करें।

मां बहिन बुआ, चाची, मौसी, मामी, ताई, दादी नारी।
प्रिय समवयस्क संबंधों में पत्नी, भावी सरहज सारी।
ममता की मोहक महक भरी वह सुन्दर सुरभित फुलवारी
वह घर निर्जीव इमारत है जिस घर में नहीं सुखी नारी।

इस धरती की प्रतिमूर्ति मानवी का न कभी अपमान करें।
नारी है नर की खान सदा उसका समुचित सम्मान करें।

सम्मान दिया नारायण ने लक्ष्मी नारायण कहलाये।
प्रभु राम कृष्ण के साथ नाम सीता राधा पहिले आये।
नारियां जहां पर सम्मानित, देवता वहीं पर रमते हैं।
वे शुभाकांक्षणी, कल्याणी, उनमें सद्भाव महकते हैं।

शासन समाज अब दृढ़ता से उनको सुरक्षा प्रदान करें।
नारी है नर की खान सदा उसका समुचित सम्मान करें।

यह बलात्कार दानव कैसे मानवता के घर घुस आया।
क्यों अत्याचार निरंकुश है क्यों कोई उसे न रोक पाया।
अब मानवीय चेतना प्रखर जन-जन में हमें जगाना है।
मानव सहचरी मानवी का उत्पीड़न शीघ्र मिटाना है।

जब लखें पराई लड़की को निज बहिन सुता का ध्यान करें।
नारी है नर की खान सदा उसका समुचित सम्मान करें।

धरती पर अनुपम है नारी तुलना न किसी से हो सकती।
चलते फिरते बोलते फूल तो उनसे तुलना हो सकती।
हीरे में अगर हृदय होता, सोने में यदि सुगंध होती।
चंदा यदि धरती पर चलता नारी उससे बढ़कर होती।

हम तुच्छ वस्तुओं के खातिर उसका न कभी बलिदान करें।
नारी है नर की खान सदा उसका समुचित सम्मान करें।

जब हुआ पुत्र का जन्म चली बंदूक खुशी की बाद आई।
पुत्री का जन्म हुआ तो मानो गाजगिरी आफत आई।
अब करने लगा भ्रूण हत्या मानव भी कितना पतित हुआ।
सिर जिसे चढ़ाया स्वयं उसी दारुण दहेज से व्यथित हुआ।

अब दफना दें रूढ़ियां शीघ्र जो नारी का अपमान करें।
नारी है नर की खान सदा उसका समुचित सम्मान करें।

सौभाग्य हमारा पुत्र वधू बनकर लक्ष्मी घर में आई।
सुख स्वप्न संजोये आंखों में घर में खुशियां बोने लाई।
अब माता-पिता, बहिन-भाई हैं सास-ससुर ननदी देवर।
परिवार ये प्यार सरोवर है पुत्री-वधुओं में क्या अंतर।

खुशियों के कमल खिलेंगे जब हम सबसे प्यार समान करें।
नारी है नर की खान सदा उसका समुचित सम्मान करें।

तन मन आत्मा का मधुर मिलन पावन विवाह कहलाता है।
सच्चे स्नेह से सुरभित यह तो जन्म-जन्म का नाता है।
नर नारी भौतिक वस्तु नहीं मन चाहे जब बदली जाये।
निर्मम तलाक की प्रथा हमारी संस्कृति नहीं पचा पाये।

इस नग्न पश्चिमी संस्कृति का पश्चिम में ही अवसान करें।
नारी है नर की खान सदा उसका समुचित सम्मान करें।

नारी सजीव मानवता है, कवि न्यौछावर इस नारी पर।
जो रहे प्रेम से नर-नारी तो स्वर्ग यहीं इस धरती पर।
लड़की न जन्म लेगी तो लड़के किससे व्याहे जाएंगे ?
यदि पेड़ नहीं उगने देंगे, फल कहो कहां से आएंगे ?

हम मानव हैं मानव मूल्यों को आदर दें, उत्थान करें।
नारी है नर की खान सदा उसका समुचित सम्मान करें।

बड़ी सी बात

✍ प्रह्लाद श्रीमाली, चेन्नई

लिखणो बड़ी बात कोनी। बड़ी बात है छपणो। तो लेखक री रचनावां प्रकाशित होवण लागी। अर वो मानण लागो कै आ बड़ी बात है। रचना छपती अर सागै लेखक रो नांव ई। वो देखतो नै राजी होवतो। कै वाह! कित्ती बड़ी बात है आ। भाई-भायलां नै ई जमावतो। वे मुळकता थकां बड़ी बात आळी बात मंजूर करता। लेखक नै सुख मिलतो। साथै ई शंका पण उपजती। कठैई इणां री मुळक में व्यंग तो कोनी। चिंतनशील प्राणी रे लारै आ ईज तो अबखाई। हरमेस आशंका में रेवणो पड़े। कठेई उणरै मुखारबिंद सूं निकळी प्रार्थना नै पण भाई लोग व्यंग्य नीं मान लेवै। दूजी कानी कोई उणसूं अरदास करे तोई पण खटको रेवै। आगलो कठेई व्यंग तो नी कर रैयो। अलबत्ता व्यंग करणो व्यंगकार आपरी बपोती मान'र ईज चाल रैया है। खैर!

लेखक ने चोखो लागतो के रचनावां लगोलग छप रैयी है। पण एक बात खटकती। लेखक मैसूस करतो कै पत्र-पित्रकावां में छपण आळा दूजा लोकां रै मुकाबले वो घणो लारे है। घणकरा लेखक आपरा परिचय में पाव दर्जन सूं ले'र डेढ़ दर्जन तांई पोथियां प्रकाशित होवण रो लेखो लिखता। उणां मांय सूं केई लेखकां री कीं पोथियां तो पुरस्कृत पण होवती। बांच'र लेखक रा काळजा माथै सांप लोटता। कुंठा मार्‌यो वो शंका करतो। अै बंदा खालमी हांक रैयो है। इच्छा उळारी मारती। अब कै किणी रचना सागे परिचय पेटे चार-पांच पुस्तकां प्रकाशित होवण रो उल्लेख झाड़ देस्यूं। पण हिम्मत नीं हालती। पोल खुल जावण रो भी सतावंतो। अबै लेखक नै साव मेसूस होवण लागो। पत्र-पत्रिकावां में रचना छपणी कोई बड़ी बात कोनी। बड़ी बात है आपरी रचनावां रो संग्रह प्रकाशित होवणो। पोथी प्रकाशित करावण में जबरी कसरत करणी पड़ै। शारीरिक कसरत सूं डील री मांस-पेशियां में मजबूती अर कसावट आवै। पण इण कसरत में नुंवा लेखक ने आपरी गांठ ढीली करणी पड़ै। जिण सूं करने थोड़ी-घणी आर्थिक कमजोरी आवण रो पूरो चांस रेवै। इण अबखाई सूं पार पड़नै ई छेवट लोक पोथी छपाई। अबै लेखक आपरी एक ताजी रचना एक पत्रिका नै भेजी। अर परिचय में उछाव सागे एक पोथी प्रकाशित होवण रो डंको ठोक दियो। पण रचना छपी कोनी। संपादक रा खेद सागै पाछी आयगी। लेखक रा कंवळा हिवड़ा रै कड़क ठेस पूगी। संपादक जाणै किण भव री दुस्मणी काडी ही। इण पत्रिका में तो लेखक री मोकळी रचनावां आय चुकी ही। चिंतन कर्‌यां लेखक नै ठा पड़ी। पोथी छपणी बड़ी बात नीं है। बड़ी बात है पोथी पुस्कृत होवणी।

लेखक जुद्ध स्तर माथै लाग गयो। तमाम पुरस्कारवती साहित्यिक संस्थावां नै आपरी पुस्तक री प्रतियां भेज दी। जठै-कठै गुंजाइश निकळी उठै ओळखाण-पिछाण रो लीरो ई रंगडियो-घिसियो। ओ लेखक रै आगला भव रो पुण्य प्रभाव हो कै पछै इण जलम रो ताकड़ो तिकड़मी प्रयास। एक नामी संस्था वीं री पोथी पुरस्कृत घोषित कर दी। लेखक रो जीव घणो सोरो हुयो। उण उमंगभरी सांस लीवी। इब देश री सगळी पत्र-पत्रिकावां में इण कृति री चरचा चालसी। सबां री जुबान माथै इणरो नांव होसी। पुस्तक री घणी डिमांड रैवेला। प्रकाशक पट्टो दूजोड़ो संस्करण काडण री त्यारियां करसी अैड़ी हालत में लेखक तकड़ी रॉयल्टी वसूल करण री तेवड़ली। बो बिना पांख्यां उडबा लागो। पण संस्था द्वारा एक सादा-सा समारोह में पुस्कृत होवतांई झटका सूं नीचे ठिकोणो। पुरस्कार पेटे अखबार रै मांयला खूणा में दो लेणा री खबर ही। कुजोग सूं जिणमें लेखक रो नांव ई साव नीं छप्यो।

लेखक हार नीं मानी। शहर रा सगळा साहित्यिक तत्वां नै आपरी पोथी री एक-एक प्रति भेंट कर नाखी। इण जाणकारी सागै कै आ महताऊ कृति अबार ताजी तर पुरस्कृत हुई है। सबूत में वो संस्था सूं मिळयोड़ो सनमान पत्र पण देखावंतो गयो। भाइड़ा देखता, चौंकता, मुळकता, बधाई देंवता अर एहसान करता थकां पोथी स्वीकारता। अबै जा'र बोध हुयो। पुस्तक पुरस्कृत होवण में कोई बड़ाई कोनी। वास्तव में बड़ी बात है पोथी चर्चित होवणी। अर पोथी चर्चित होव है आलोचकां री कृपा सूं। ओ तथ्य लेखक लेखन में दखल करण सूं पैली ई जाणातो हो। पण एन मौका माथै भान कोनी रैयो। खैर अबे ई खरी। लेखक नेहचो मिळ्यो।

पोथी री प्रतियां ठावकी पत्र-पत्रिकावां ने भेजण में लेखक गजब री फुर्ती राखी। उणनै भरोसो हो। दो-चार महीनां में देश री तमाम ओपती पत्र-पत्रिकावां में इण किताब री समीक्षा छप जासी। पुस्तक पुरस्कृत है। सो आलोचकां-प्रशंसकां रै बिचाळै गंभीर-रोचक बहस छिड़ैला। जणे पोथी रा जिक्र सागै म्हारो नांव ई बारम्बार छपेला। अबै प्रसिद्धि पावण में देर नीं। लेखक पाछो उडवा लागो। पण आठ-दस महीना बीत गया। बस कीं पत्र-पत्रिकावां री पुस्तक-प्राप्ति सूची में लेखक री पोथी रो नांव भर हो। लेखक रो धीरप अमूजण लागो। उणे ध्यान लगायो, चिंतन कर्‌यो। अर बींरी चेतना जागी। वो आपरी पोथी ले'र जूना-जाणीता आलोचक री शरणां पूगो। वां री आलोचना तणों आतंक आखा देश में हो। लेखक वां सूं आपरी पोथी री आलोचना करण री अरदास करी।

वे व्यावहारिक सुर में बोल्या, 'यूं कियां खालमी आलोचना कर देवां। पोथी री आलोचना करणी कोई हंसी-खेल थोड़ी है। ओ तो एक गंभीर अनुष्ठान है। अर यज्ञ-अनुष्ठान जेड़ा महान कर्म फगत बातां सूं संभव कोनी। ज्यूं कथा-कीर्तन, पूजा-पाठ, जप-हवन यज्ञ-महायज्ञ रा जूदा-जूदा एस्टीमेट होवे है। त्यूं ईज आलोचना री पण न्यारी-न्यारी ओपती डिग्रियां है। आप जिण डिग्री री आलोचना चावोला उणी हिसाब सूं खर्च बैठसी। फर्स्ट डिग्री आलोचना सूं आपरी पोथी री पूग फगत बुद्धिजीवी पाठकां तक होवेला। सेकेण्ड डिग्री आळी आलोचना होवतांई आप पाठक, जिणां नै चालू पाठक पण कैवां हां, आपरी पोथी

मेरा अंश

✍ रेनूश्री अस्थाना

प्रात: की नन्हीं अंजुली में
किरणों की सौगात सजाती,
थपकी देती कौन ? मुलायम,
स्वर के मीठे साज बजाती।
यूं लता है कभी पखावज,
कभी जलतरंगों की सप्तक हो,
कभी पैर में पायल जैसी,
घुंघरू की बजती रुनझुन हो।
कभी विहंसती प्यारी आंखें,
सीने में आकाश के,
कभी तैरते परियों से स्वर,
कानों में मेरी आस के,
कभी पांच कोमल अंगुलियां,
गालों को मेरे सहलातीं,
कभी गर्म रूई सा टुकड़ा,
सांसों को मेरे गर्मातीं।
कभी यूं लगता जैसे कोई,
स्वर मल्हार से जुड़कर आया,
कभी यूं लगता, सच्चाई है ?
या है कोई अद्‌भुत माया ?
कुछ मैं बोलू तभी अचानक,
हो गया सब कुछ धुंधला-धुंधला
नन्हीं आंखें लगी डूबने,
खुशबू की खो गई मेखला।
नन्हीं आंखों से टपके आंसू,
गिर गये मेरी पलकों पर,
मुझे लगा यूं, हुआ कहीं कुछ
मेरे दिल के टुकड़े पर।
मुझे बचा लो, मां ! मत मारो,
रोती सी आवाज ये आयी
मैं हूं, तुम्हारा अंश न मारो
क्या मेरी ममता ना भायी ?
सपनों से खुल गई थी आंखें
दिल मेरा डूबने लगा था
बलि नहीं दूंगी मैं तेरी
अन्तर यह सोचने लगा था।

'नई सदी की तुम हो नारी'

✍ श्यामसुन्दर बगड़िया
कोलकाता

नई सदी की तुम हो नारी !
किसने अबला तुम्हें कहा है
आंचल में तो दूध भरा है
अगर नेत्र से नीर बहा है,
उसे पोंछ तुम हो खुद्दारी। नई सदी...

नहीं नुमाइश मुजरा केवल
बिंदी चूड़ी कजरा केवल
नुपूर बिछुआ गजरा केवल,
प्रेम-धाम तुम हो किलकारी। नई सदी...

हर मंजिल आसान करेगी
नारी अब तूफान बढ़ेगी
हर बाधा सोपान बनेगी,
हिम्मतवाली तुम हो नारी। नई सदी...

नारी तुम धधकी ज्वाला हो
इस युग की काल कराला हो
विश्व पटल तरुणी बाला हो,
अमित शक्ति तुम हो हुँकारी। नई सदी...

नारी तुम हो लक्ष्मी रूपा
नारी तुम हो विद्या रूपा
नारी तुम हो दुर्गा रूपा,
त्रिगुण संपदा तुम हो न्यारी। नई सदी...

नर नारी मिल एक व्यक्ति है
नर नारी सम्पूर्ण सृष्टि है
अर्धनारीश्वर की दृष्टि है,
नर माली तुम हो फुलवारी। नई सदी...

मोलावेला। अर थर्ड डिग्री आलोचना रो अंसर तो बस पूछो ई मत। स्कूल कॉलेज रा छात्रां सूं ले'र ट्रक-टैक्सी ड्राईवर तकात आपरी पुस्तक वास्ते बुक-स्टाल माथै टूंट पड़ैला।''

लेखक संकोच सागै कैयो, 'पण सा, पेली आप पोथी बांच तो लो। डिग्री बाबत चर्चा पछै कर लेस्यां।' सुण'र वे वटकिया। अबकै वां रा अंदाज में हिकारत ही, 'भला मिनखां। क्यूं खालमी टेम बरबाद कर रैया हो। पेली सूंई म्हारै कनै मोकळो आलोचकियो काम पैंडिंग पड़ियो है। म्हे पोथी बांचण बैठ गयो तो पछै आलोचना कुण करसी भाई। पोथी तो पाठक बांचैला। अर वा ई म्हारी आलोचना माथै ठावकी चर्चा हुयां पछै। अर हां चर्चा करावण रो खर्चो अलग पड़ैला।'

आलोचक जी रा बेबाक वचन सुणतांई लेखक रो मोह-भंग हुयो। आलोचना करावणतणी समूळी खाज मिटगी। सृजन अर आलोचना री गरिमा-महिमा रै आंतरा रो ज्ञान मिळ्यो। लेखक अब लिखणो छोड़ दियो है। अबकाळै वो प्रचण्ड आलोचक बणवा रा नुस्खा बटोर रैयो है।●

जीवन में 'वास्तु-शास्त्र' का प्रत्यक्ष प्रभाव

✍ श्यामलाल जालान, वास्तुशास्त्री, कोलकाता

वास्तु शास्त्र भारतवर्ष की प्राचीनतम विद्या है। इस विद्या का पूर्ण ज्ञान गुरु कृपा एवं शोध द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। पृथ्वी पर किसी भी निर्माण के लिए तथा उक्त निर्माण में रहने एवं उपयोग करने की पद्धति को वास्तु शास्त्र में पूर्ण रूप से बताया गया है। घर, दुकान, मकान, कार्यालय, कारखाना, अस्पताल, नर्सिंग होम, विद्यालय, मंदिर, मठ, फार्म हाउस का निर्माण एवं उपयोग यदि वास्तु शास्त्र के अनुकूल होवे तो ही उपभोगकर्त्ता सुखी, स्वस्थ, धनी एवं प्रतिष्ठित हो सकता है। वास्तु दोष दूर करवा लेने के बाद वास्तु शास्त्र का चमत्कारिक लाभकारी प्रभाव ५-७ दिन में ही अवश्य प्राप्त होता है।

यदि किसी भी स्थान के निर्माण या उपयोग में वास्तु दोष होता है तो उपयोगकर्त्ता का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है, धन नष्ट होने लगता है, आय घट जाती है, व्यवसाय-कारखाना बन्द भी हो सकता है। आपसी झगड़े-तनाव बढ़ जाते हैं और उपभोगकर्त्ता मानसिक तनाव से ग्रस्त होकर डिप्रेसन में चला जाता है। कभी-कभी वास्तु दोष के कारण फैक्टरी की मशीनें बार-बार टूटती हैं, उत्पादन कम होता है, माल सही नहीं बनता, ऑर्डर नही आता, कभी आर्डर आ जाता है तो ऑर्डर का माल समय पर डिलेवरी नहीं जाता और कभी माल जाता है तो भुगतान समय पर नहीं आता इत्यादि अनेक प्रकार की तकलीफें होती रहती हैं। अगर वास्तु दोष दूर करवा लिया जावे तो ये सब समस्यायें मिट जाती हैं। जिस कारखाने में करोड़ों रुपयों का इन्वेस्टमेंट होता है वही कारखाना वास्तु दोष के कारण ब्याज-ब्याज में डूब जाता है और वास्तु दोष दूर करवा देने पर वही कारखाना सामान्य स्थिति में आकर शान्ति से चलने लगता है और करोड़ों रुपया कमाता है।

कभी-कभी दुकान में, आफिस में बिक्री कम होती है और कभी बिक्री अधिक हो जाती है तो नफा नहीं होता और कभी नफा हो भी जाता है तो नफा टिकता नहीं। कभी रुपया आता नहीं और कभी रुपया आता है तो रुपया ठहरता नहीं, बरकत नहीं होती। छोटी से छोटी दुकान माल सहित १०-१५ लाख रुपयों के इन्वेस्टमेंट पर चलती है और आय नहीं हुई तो वर्ष भर में ३-४ लाख रुपयों का ब्याज-ब्याज का घाटा ही हो जाता है। नफा दिखे पर वार्षिक हिसाब में रुपया नहीं बचे तो इस नुकसान का कारण भी वास्तु दोष ही है। यह सब अनियमितता और घाटा वास्तु दोष दूर करवा देने पर नफे में बदल जाता है। दुकान ठीक से चलने लगती है। नफा भी ठहरता है। रुपया अधिक आता है और ठहरता भी है। रुपयों की कमी भी मिट जाती है।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि आय-व्यवसाय सब ठीक हो जाता है मगर वास्तव में देखा जावे तो आय व्यवसाय भाग्य में लिखे से कम है। ऐसे भाग्यशाली व्यक्ति यदि वास्तु दोष दूर करवा लेते हैं तो आय असीमित हो जाती है। आजकल स्वास्थ्य की गिरावट को लोग पर्यावरण से और जमाने से जोड़ लेते हैं मगर वास्तु दोष दूर करवा देने पर उसी पर्यावरण में स्वास्थ्य सुधर जाता है।

कभी-कभी गलत वास्तु के रहते हुए भी आदमी करोड़ों रुपया कमाता है और अहंकारवश समझता है कि वास्तु दोष कुछ भी नहीं। किन्तु इसका यह मतलब नहीं कि वास्तु शास्त्र का प्रभाव नहीं है। मैंने नजदीक से देखा है कि ऐसी स्थिति में आदमी १० के बदले १-२ ही कमाता है। अन्त में ऐसे व्यक्ति की बचत भी नगण्य रहती है। दैनिक जीवन में आने वाली हर अड़चनों को जीवन का अंग मान लेना नासमझी है। वास्तु दोष दूर करवा कर भाग्य में लिखे हुए सुख का पूरा फायदा लेना चाहिए।

आवश्यकता है मन से मजबूत होकर सही एवं जानकार वास्तु शास्त्री से सलाह लेने की। वास्तु दोष दूर करवाने में भी चिकित्सा की भांति ऊंची-अच्छी सलाह लेवें और शुद्ध एवं वास्तु दोष मुक्त स्थान का सुख भोगें। प्रत्येक स्थान पर वास्तु शास्त्र के नियमों का विशेष महत्व है। स्थान निजी हो या किराये पर लिया हो या अन्य प्रकार से लिया हुआ हो, वास्तु शास्त्र का प्रभाव सब पर एक समान है।

उपरोक्त सभी बातों का सार यही है कि वास्तु शास्त्र पद्धति से वास्तु दोष दूर करवा देने पर-

- आर्थिक संकट दूर करना पूर्णत: संभव है एवं घाटा नफा में बदल जाना पूर्णत: संभव है।
- रुपयों की आमद, टिकाव, बहुतायत एवं बरकत निश्चित संभव है।
- व्यवसाय, उत्पादन, बिक्री, आय तथा नफे में वृद्धि पूर्णत: संभव है।
- आपसी तनाव, घरेलू तनाव, श्रमिक तनाव पूर्णत: निर्मूल होना संभव है।
- कारखाना, ऑफिस, दुकान, फ्लैट, मकान आदि पूर्ण सुखदायी हो सकता है।
- किसी भी बन्द कारखाने को सुगमता से बिना बाधा के चलाया जा सकता है।
- घाटे में चल रहे कारखाने, व्यवसाय आदि निश्चित रूप से नफे में चल सकते हैं।
- व्यक्तिगत प्रभुता, प्रभाव एवं आपसी सद्भाव की वृद्धि निश्चित होती है।
- पहले से निर्मित घर, मकान, दुकान, फ्लैट, कारखानों को भी लाभदायक बना देना निश्चित संभव है।
- आरोग्यता, सफलता, सम्पन्नता, तनाव-मुक्त, समुन्नत जीवन की प्राप्ति निश्चित रूप से होती है।
- रंगीन बत्तियां, स्वस्तिक, ॐ आदि लगा लेने से कभी भी वास्तु दोष दूर नहीं हो सकता।●

औद्योगिकीय युग में आध्यात्मिकता की जरूरत

श्रीमती रंजू मोदी, अंगुल

जब से मनुष्य को अस्तित्व मिला है तभी से उसे ज्ञान पाने की इच्छा रही है। उसे प्रकृति के विभिन्न रूपों को जानने समझने की जिज्ञासा रही है। उसे 'भगवान' रूपी अजर अमर शक्ति की तलाश रही है। इसकी पूर्ति के लिए उसने हर तरह से प्रकृति को तोल मटोल दिया।

प्राचीन समय में मनुष्य ने आध्यात्मिकता की नजर से प्रकृति को देखना प्रारंभ किया। पर तेज रफ्तार की जिंदगी की वजह से उसके भेदी को पूरी तरह से न जानकर किसी भी चीज को कोई भी नाम दे दिया। अध्यात्म के नाम पर धीरे-धीरे अंधविश्वास ने उसके मन में जगह ले ली। मनुष्य ने धर्म को झूठा बना दिया पर हमेशा उसे सत्य मानता रहा। पर जब उसे यह ऐहसास हुआ कि वह गलत मार्ग पर चल रहा है तो उसने अध्यात्म की आधारशिला को छोड़ विज्ञान का हाथ थाम लिया। उसने प्रौद्योगिकीय क्षेत्र में कदम रखा और इतना आगे बढ़ गया कि अध्यात्म का उसके जीवन में थोड़ा ही अस्तित्व रह गया और धीरे-धीरे मनुष्य ने अध्यात्म को भूला दिया। पर सोचने की बात यह है कि वह थोड़ा अस्तित्व भी क्यों रह गया ? आज संसार में हर तरफ सुविधा ही सुविधा है। मनुष्य आज आर्थिक सुख को ही सफलता की चाबी मानता है पर क्या ऐसी प्रगति को सही माना जा सकता है जिसमें केवल भौतिक सुख है, मानसिक और आंतरिक नहीं। जिससे एक तरफ तो मनुष्य उन्नति के चर्मोत्कर्ष पर पहुंच गया है दूसरी तरफ वह अपने ही बनाए हुए दलदल में धंसता चला जा रहा है - मनुष्य सुख कमाता तो है पर उसे भोगने का समय उसके पास नहीं है। वह किंर्कव्यमूढ़ सा होकर सत्य की खोज में जुटा हुआ है। यहीं पर उसके जीवन में बचा थोड़ा सा आध्यात्मिक ज्ञान सहायता कर सकता है - मनुष्य जो चाहता है उसे पाने के लिए वह आध्यात्मिकता की उपेक्षा नहीं कर सकता। सच्ची सफलता के लिए चार पुरुषार्थ है धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। मनुष्य इसे पूरी तरह समझ नहीं पाया है और वह सिर्फ अर्थ और काम के पीछे भाग रहा है। धर्म और मोक्ष को प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिकता ही मनुष्य का पथ प्रदर्शन कर सकती है इसलिए इस प्रौद्योगिकीय युग में भी मनुष्य को अध्यात्म की जरूरत है। अध्यात्म और प्रौद्योग परस्पर विरोधी माने जाते हैं पर सही नजरों से देखा जाए तो विज्ञान का विरोध अंधविश्वास का विरोधी है- अध्यात्म और प्रौद्योग के ध्येय एक ही हैं, भले ही मार्ग भिन्न है अध्यात्म ईश्वर और आत्ममान के स्वरूप को जानने का मार्ग है। दोनों का लक्ष्य सत्य की खोज है। प्रौद्योग मनुष्य के ज्ञान की वृद्धि करता है और अध्यात्म उसके आचरण की। उदाहरण के तौर पर आज विज्ञान अंतरिक्ष की खोज में लगा है पर अंतरिक्ष के असीमित रहस्यों का कोई जवाब उसके पास नहीं है। पर अध्यात्म उसके सारे सवालों के जवाब देता है - बस जरूरत है उन जवाबों के आधार पर परीक्षण और उसे मानने की इसलिए जीवन में सफलता पाने के लिए प्रौद्योग और अध्यात्म दोनों का परस्पर सहयोग होना चाहिए। खुशी की बात यह है कि शायद मनुष्य को यह बात समझ में आ गई है - इसलिए वैज्ञानिक आज वेदों का परीक्षण और अध्यात्म कर रहे हैं। मनुष्य जीने की कला सीख इस यांत्रिक युग में आगे बढ़ मानवता कल्याण का लक्ष्य हासिल कर पाएगा।●

अमृत घट

- पूरी ईमानदारी के साथ जनता की सेवा के बावजूद उसे खुश कर पाना संभव नहीं है।
- भीड़ दैत्य होती है, उसके पास सिर तो काफी होते हैं, दिमाग नहीं होता।
- बुद्धिमान व साहसी लोगों में ही अपनी भूल कबूल करने की हिम्मत होती है।
- अनुभव का विद्यालय बहुत महंगा होता है; मगर मूर्ख महंगी कीमत चुकाकर भी कुछ नहीं सीखते।
- सलाह दूसरों से ली जा सकती है, आचरण स्वयं ही करना पड़ता है।
- बड़े जहाज मझधार के लिए ही बनाये जाते हैं; छोटी नौकाओं को किनारे से बहुत दूर नहीं जाना चाहिए।
- लोभ और आनन्द कभी आपस में मिले ही नहीं, फिर उनका परस्पर परिचय कहां से होता ?
- मेहनत से कर्ज उतर जाते हैं, निराशा से वे बढ़े चले जाते हैं।
- एक ही व्यक्ति मित्र और चापलूस दोनों नहीं हो सकता।
- हम कितने ही आधुनिक हों, हमारा रक्त आदिम ही है।
- परिहास से मित्र व उपहास से शत्रु बनाए जाते हैं।
- अत्यधिक सुख से अधिक दुखदाई और अत्यधिक स्वतंत्रता से अधिक बंधनकारी कुछ नहीं होता।
- अज्ञात की अपेक्षा असावधानी अधिक हानि पहुंचाती है।
- पढ़ा-लिखा कठमुल्ला अनपढ़ की अपेक्षा कहीं अधिक जड़मति होता है।
- मौत रिश्वत नहीं लेती। ऊषा दिन-भर नहीं रहती।

– बैंजामिन फ्रेंकलीन

आज भायला होली है

होली रो हुड़दंग मचाती
मिलै जिकै पर रंग लगाती
ढोल नगारा चंग बजाती
छम-छम पायलिया छमकाती

मीठी मुरली तान सुणाती
धमाल रसियो फागण गाती
हंसती-गाती, धूम मचाती
नुवीं बीनण्यां रै मन भाती

गली-गली में घूम रई आ
मदमस्तां री टोली है
आज्या थोड़ी भांग छाणल्यां
आज भायला ! होली है ।।

होली खेलां बोल्यो देवर
भाभी बोली- 'नो-नो-नेवर'
पाछै होली की बात करो
पैल्यां मंगवा की द्यो घेवर

पण, देवरियो दर ना मानी
झट स्यूं आ भाभी रै सामी
मारी भर-भर कर पिचकारी
भीज्यो लहंगो चोली साड़ी

तन भीज गयो, मन भीज गयो
भाभी पर मस्ती छाण लगी
'करोड़ों' पकड़कर हाथां में
देवरिये रै मचकाण लगी

ई धींगा-मस्ती में देखो
भाभी री फटगी चोली है
देवरियो बोल्यो- माफ करो
देखो भाभी सा ! होली है ।।

निज भासा में गिट-पिट करता
गौरा-चिट्टा, लंबा चोड़ा
जयपुर की चोपड़ पर होली
खेलै छै अंग्रेजी छोरा।

लियां केमरो घूम रया है
पीयोड़ा-सा झूम रया है
कई-कई तो आं में हिन्दी
भी जाणै है थोड़ा-थोड़ा

मैं पूछ्यो-कैसा लगता है ?
वै बोल्या - ''अच्छा लगटा है''
बोट अच्छा है जौली है
मैं बोल्यो - दिस होली है ।।

म्हारो इक पड़ोसी ताई स्यूं
होली खेलण आ बैठ्यो
लेकर गुलाल झट ''ताई'' रै
गालां पर हाथ फिरा बैठ्यो

बा बांह पकड़ कर झट बीं री
गुद्दी में ल्हांफा दो मार्‌या
बोली- ले तन्नैं तो होली
मैं खिलवाऊं रै रामार्‌या

तन्नैं मैं ई ल्हादी मेरै स्यूं
करण चल्यो टसकोली है
बो थूक मुट्ठियां में भाग्यो
घर-जाय टाट पंपोली है

ताई बीं नै हेलो मारयो
क्यूं ? और खेलसी के होली
बो बोल्यो - मरणो थोड़ी है
जो पड़गी बा ई बोली है
मैं बोल्यो- भाया होली है ।।

– ताऊ शेखावाटी, सवाई माधोपुर (राजस्थान)

ज्ञान अमृत

अपने काम के विषय में केवल तभी सोचो जब कि वह हो रहा हो, उससे पहले और पीछे नहीं।

जो कार्य तुम समाप्त कर चुके हो, उस पर अब सोच-विचार मत करो। अब वह भूतकाल की चीज बन गया है और उसके बारे में दोबारा सोच-विचार करने का अर्थ है, शक्ति का अपव्यय करना।

जिस कार्य को तुम्हें अभी करना है, उस पर पहले से ही अपने मन को परिश्रम मत करने दो। जो शक्ति तुम्हारे अन्दर कार्य करती है, वह उसका समय आने पर उसकी ओर स्वयं ध्यान देगी।

मन की ये दो आदतें उस पुरानी क्रिया की वस्तुएं हैं, जिन्हें मिटाने के लिए रूपान्तरकारी शक्ति दबाव डाल रही है। भौतिक मन का इनमें लीन रहना ही तुम्हारे तनाव और तुम्हारी थकावट का कारण है। यदि तुम यह याद रख सको कि तुम्हें अपने मन को कार्य करने की अनुमति तभी देनी है, जबकि उसकी आवश्यकता होगी, तो यह तनाव और थकावट की भावना कम होकर दूर हो जाएगी। यह वस्तुतः संक्रमण-काल की क्रिया है। इसके बाद ही अति मानसिक क्रिया भौतिक मन को अपने अधिकार में करके उसके अन्दर प्रकाश का सहज स्वाभाविक कर्म लाएगी।

– श्री अरविन्द

होली कैसे आज मनाऊँ ?

ज्वार हृदय में उठता मेरे, होली कैसे आज मनाऊं ?
माना मैंने, बदला मौसम, धरती ने ले ली अंगड़ाई।
कूक उठी कुंजों की रानी, तरुओं में छाई तरुणाई ।।
पर जन-जीवन तो है नीरस, उसको कैसे सरस बनाऊं ?
सुनता आया, होली के दिन, पाप मिटा था भू से सारा।
केतु सत्य का लहराया था, दुराचार पर अनुपम प्यारा ।।
किन्तु आज तो व्याप्त दनुजता, उसका कैसे नाम मिटाऊं ?
जीवित कितने ही हिरण्य हैं, तड़प रहे प्रह्लाद बिचारे।
रोते हैं नृसिंह के बेटे, उन्हें सताते हैं हत्यारे ।।

जीवन में जब घुला जहर है, कैसे रंग-गुलाल उड़ाऊं ?
मिटी गरीबी नहीं अभी तक, जनता बनी हुई बेचारी।
सत्ता की बढ़ती विलासिता, नाव भँवर में पड़ी हमारी ।।
नैतिकता खाती है ठोकर, कैसे ढोल मृदंग बजाऊं ?
अन्न बिना मरते गरीब हैं, मौज मनाते कुर्सीधारी।
प्रासादों में रहते खुद तो, बात करें समता की प्यारी ।।
लेकर कर्ज बताओ कब तक, घी के दीप जलाता जाऊं ?
ज्वार हृदय में उठता मेरे, होली कैसे आज मनाऊं ?

– युगल किशोर चौधरी, चनपटिया (बिहार)

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

कोलकाता : गणतंत्र दिवस समारोह सम्पन्न

युग पथ चरण

गणतंत्र दिवस के अवसर पर मारवाड़ी सम्मेलन भवन में राष्ट्रीय पताका के उत्तोलन के उपरान्त परिचर्चा करते हुए बाएं से प. बंग के प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के मंत्री सर्वश्री गोपाल अग्रवाल, सुभाष मुरारका, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री राम औतार पोद्दार, राष्ट्रीय, अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान, प्रेम सुरेलिया, ओम लड़िया, सुप्रसिद्ध कवि ताऊ शेखावटी एवं प्रादेशिक अध्यक्ष लोकनाथ डोकानिया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा गणतंत्र दिवस समारोह हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी मारवाड़ी सम्मेलन भवन में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान द्वारा राष्ट्रीय पताका का उत्तोलन कर हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

महामंत्री श्री भानीराम सुरेका की अनुपस्थिति में कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री रामऔतार पोद्दार ने किया। अध्यक्षीय भाषण में श्री तुलस्यान ने उपस्थित सदस्यों से अनुरोध किया कि वे एकजुट होकर देश हित में हमेशा काम करें। मारवाड़ी सम्मेलन के ऊपर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन का लगाव शुरू से ही देश के हित में रहा है। जब भी देश के अन्दर एवं बाहर सम्मेलन ने खामियां देखी उनके खिलाफ एकजुट होकर आवाज बुलंद की। जरूरत है आपस में मिलकर समाज एवं राष्ट्र के हित में काम करने की। ''देश की सुरक्षा ही हमारी सुरक्षा है।''

राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस के अवसर पर मारवाड़ी सम्मेलन भवन में तिरंगा फहराने के उपरान्त सदस्यों को सम्बोधित करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान।

राजस्थान से आए हास्य कवि ताऊ शेखावाटी ने इस सुअवसर पर राष्ट्रीय गीत सुनाकर सभी का मन मोह लिया। इस महान गणतंत्र दिवस पर उपस्थित थे- उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री रामऔतार पोद्दार, पं. बंगाल मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया, महामंत्री श्री गोपाल अग्रवाल, श्री बंशीलाल बाहेती, श्री ओम लडिया, श्री प्रेमचंद्र सुरेलिया, श्री सुभाष मुरारका, श्री नंदलाल सिंहानिया, श्री आत्माराम तोदी एवं श्री इन्द्र कुमार केजरीवाल।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

पटना : बैठक में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय

७-१-२००६। बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति की बैठक कार्यालय कक्ष में श्री महेन्द्र कुमार चौधरी की अध्यक्षता में हुई जिसमें कई निर्णय लिए गए। गत बैठक की कार्यवाही सर्वसम्मति से स्वीकृत की गई। आए हुए ऋण छात्रवृत्ति आवेदन पत्रों पर विचार किया गया एवं विभिन्न वर्ग एवं विषयों के ५ छात्र/छात्राओं को ऋण छात्रवृत्ति के रूप में ३१ हजार २०० रुपये स्वीकृत किए गए।

आगामी २ अप्रैल को डा. राममनोहर लोहिया व्याख्यानमाला करने का निर्णय लिया गया। विषय है - 'बिहार में शिक्षा के उन्नयन में समाज सेवी संस्थाओं की भूमिका।' समाज के सभी शाखाओं से पुरुष एवं महिला वर्ग में क्रमशः स्व. अर्जुन अग्रवाला पुरस्कार

एवं स्व. मंजू गुप्ता पुरस्कार प्रदान करने हेतु समाज के किसी भी क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त या विशिष्ट योगदान करने वाले व्यक्तियों के नाम एवं पूर्ण विवरण के साथ दिनांक १५ मार्च, २००६ तक आवेदन आमंत्रित है।

झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन

देवघर : द्वितीय प्रान्तीय अधिवेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न

१८ एवं १९ फरवरी। झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन का द्वितीय अधिवेशन देवघर में धूमधाम से संपन्न हुआ। सामाजिक विकृतियों के निदान और समाज सुधार के संदेशों से भरे अनेक प्रस्ताव अधिवेशन के दौरान पारित किये गये।

विवाह समारोहों में तड़क-भड़क और दिखावे के विरोध में वक्ताओं ने विशेषकर अपने विचार व्यक्त किये एवं प्रस्ताव लिया गया कि विवाह में सादगी बरती जाय एवं 'मिलनी' में मात्र चार रुपये ही दिये जाएं। प्रस्ताव के जरिये झारखण्ड प्रान्तीय सम्मेलन की एक पत्रिका निकालने का भी निर्णय लिया गया। एक अन्य प्रस्ताव के जरिये कहा गया कि भ्रूण हत्या जैसे जघन्य कार्य को अविलम्ब रोका जाना चाहिए। भ्रूण हत्या पर कड़ी रोक लगाने के मद्देनजर यह निर्णय लिया गया कि सम्मेलन की प्रत्येक शाखाओं द्वारा इस संबंध में एक प्रस्ताव पारित कर त्वरित गति से कार्य किया जाना चाहिए। यह भी प्रस्ताव पारित किया गया कि जिस प्रकार प्रत्येक राष्ट्र अपनी धरोहरों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए उन्हें संरक्षित घोषित करके उनका जीर्णोद्धार करता है, उसी प्रकार मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा भी सामाजिक धरोहरों को सामाजिक संरक्षण प्रदान करके उनका जीर्णोद्धार करना चाहिए, ताकि पूर्वजों के द्वारा समाज के विकास एवं सुविधा के लिए प्रदान की गई कृतियां सुरक्षित रह सकें और सकल समाज का कल्याण हो सके। प्रांतीय सम्मेलन के संविधान में परिवर्तन करने के लिए एक संविधान संशोधन समिति का गठन किया गया।

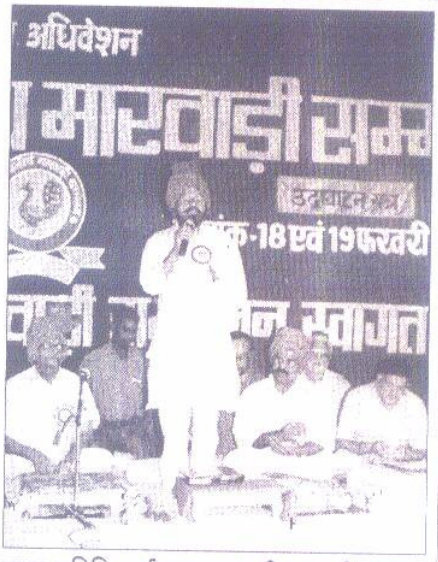

मुख्य अतिथि - श्री इन्दर चन्द जी नामधारी, अध्यक्ष झारखण्ड विधानसभा।

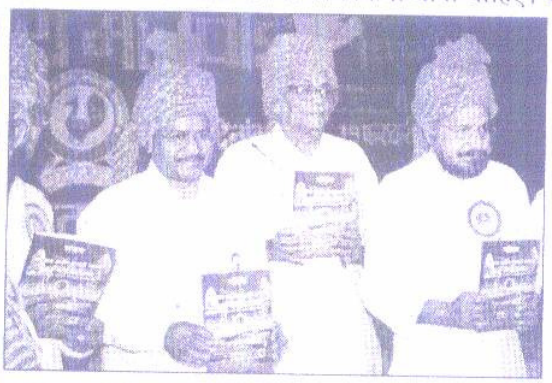

स्मारिका विमोचन : श्री बाबूलाल जी मरांडी द्वारा बीच में गोविन्दजी डालमिया - बाबूलाल मरांडी एवं माननीय इन्दर सिंह जी नामधारी, साथ में 'मंथन' स्मारिका।

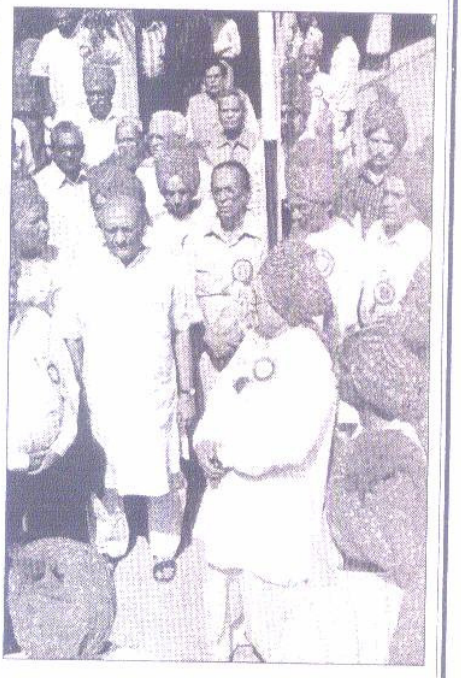

सद्भावना यात्रा में पुरुष वर्ग

दो दिवसीय इस सम्मेलन का उद्घाटन झारखण्ड के प्रथम मुख्यमंत्री सह सांसद श्री बाबूलाल मरांडी ने दीप प्रज्वलित कर किया एवं अपने सम्बोधन में कहा कि मारवाड़ियों के अन्दर हिम्मत और साहस है और उसने समाज के अन्दर आत्म-विश्वास जगाया है। उन्होंने कहा कि मारवाड़ी समाज ने जो पैसा कमाया है उससे समाज के लिए कुछ न कुछ किया है। उन्होंने यह भी कहा कि मारवाड़ी समाज को ज्यादा से ज्यादा लोगों को रोजगार देना चाहिए।

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि झारखण्ड विधानसभा के अध्यक्ष श्री इन्दर सिंह नामधारी ने कहा कि मारवाड़ी शोषक नहीं, सेवक हैं। मारवाड़ी के प्रति मानसिकता को बदला जाना चाहिए। उन्होंने मारवाड़ी शादियों में बढ़ते तामझाम पर चिंता जताई और इस फिजुलखर्ची पर अंकुश लगाने का आह्वान किया। श्री नामधारी ने मारवाड़ी समाज के पुरुषार्थ पर अपने साहित्यिक अंदाज में सकारात्मक टिप्पणी की।

सद्भावना यात्रा में महिलायें

स्वागताध्यक्ष श्री तिलोक चन्द बाजला ने स्वागत भाषण करते हुए समाज की दिशा का निर्धारण किया जबकि सम्मेलन के प्रदेश अध्यक्ष श्री गोविन्द डालमिया ने अपने विस्तृत सम्बोधन में सम्मेलन के उद्देश्यों और कार्य की प्राथमिकताओं पर प्रकाश डाला। देवघर जिला मारवाड़ी सम्मेलन स्वागत समिति के स्वागत मंत्री श्री अभय कुमार सर्राफ ने उद्घाटन सत्र का संचालन किया। गणेश वन्दना और मंगलाचरण के गीतों के साथ अधिवेशन का उद्घाटन सत्र आरंभ हुआ। सम्मेलन के प्रांतीय महामंत्री श्री धर्मचन्द जैन 'रारा' ने अपने प्रतिवेदन में सम्मेलन की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

उद्घाटन सत्र को श्री राजकुमार केडिया, श्री धर्मचन्द बजाज, श्री प्रदीप तुलस्यान, श्री मुरलीधर केडिया, श्री विश्वम्भर नेवर एवं श्रीमती राजकुमारी हिम्मतसिंहका ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर अधिवेशन की आकर्षक संग्रहणीय पत्रिका 'मंथन' का विमोचन उद्घाटनकर्ता श्री बाबूलाल मरांडी ने किया। उक्त अवसर पर 'मंथन' के प्रधान सम्पादक डॉ. लक्ष्मण कुमार नेवर, संपादक राजकुमार शर्मा (अधिवक्ता) प्रबंध संपादक श्री दीप सराईया व सह संपादक श्री जगदीश मूंधड़ा भी उपस्थित थे।

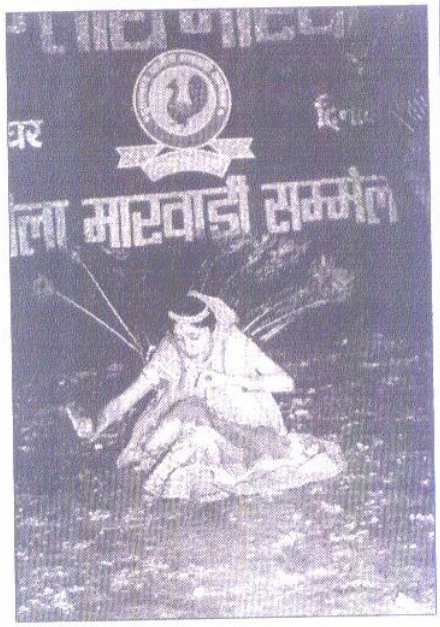

सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश करती राधिका बाजला

उद्घाटन सत्र में सम्मेलन की ओर से श्री परमानन्द गुटगुटिया, श्रीमती गीता देवी तुलस्यान, श्री तिलोकचन्द वाजला, श्री विश्वम्भर नेवर, श्री ताराचन्द जैन और श्री सुशील झुनझुनवाला को चादर ओढ़ाकर प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। धन्यवाद ज्ञापन स्वागत मंत्री श्री अभय कुमार सर्राफ ने किया।

संगठन एवं सामाजिक चेतना विषय पर आयोजित खुला अधिवेशन के सत्र में श्री भंवर चन्द खण्डेलवाल, श्री महेन्द्र जी भगानिया, श्री दीनदयाल डालमिया एवं श्री हनुमान गौड़ ने संगठन की स्थिति और सामाजिक चेतना के उत्थान पर अपने विचार प्रकट किये।

'युवा सत्र' : अधिवेशन के दूसरे दिन राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका विषय पर आधारित विचार गोष्ठी को श्री विजय कौशिक, श्री पवन तमकोरिया, श्री राजेश मूंधड़ा, श्री तिलोक चन्द बाजला, श्री किशोरी मोदी, श्री रमेश वाजला, श्री ताराचन्द जैन, श्री अशोक सर्राफ, श्री घनश्याम खिड़ेवाला, श्री राजकुमार शर्मा (अधिवक्ता), श्री अभय कुमार सर्राफ, श्री ओम प्रकाश छावछरिया एवं श्री कमल किशोर हमीरवासिया ने सम्बोधित किया। अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष श्री गोविन्द डालमिया ने की।

महिला सभा का खुला अधिवेशन

खुला अधिवेशन के द्वितीय सत्र को सम्बोधित करते हुए श्री मुरलीधर केडिया, श्री आनन्द सराईया, श्री नागरमल बाजोरिया, श्री देवी प्रसाद डालमिया, श्री तारा चन्द जैन ने मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा लिये जा सकने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। सम्मेलन के अन्त में स्वागत मंत्री श्री अभय कुमार सर्राफ ने अधिवेशन को सफल बनाने के लिए सबों का धन्यवाद ज्ञापन किया। राष्ट्रीय गान के साथ अधिवेशन का समापन हुआ।

अधिवेशन के अवसर पर मारवाड़ी महिला समिति द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की मनमोहक प्रस्तुति की गई।

झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के द्वितीय अधिवेशन में दिनांक १८-२-०६ को दो घण्टे का महिला सत्र रखा गया। सत्र का विषय था - 'समाज विकास में महिलाओं का

योगदान।'

महिला सत्र की मुख्य अतिथि थीं अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की संस्थापिका श्रीमती सुशीला मोहनका एवं सत्र की अध्यक्षता अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की भूतपूर्व अध्यक्षा श्रीमती जया डोकानिया ने की। इनके अतिरिक्त श्रीमती पुष्पा चोपड़ा, श्रीमती राजकुमारी हिम्मतसिंहका, श्रीमती मंजु बंका- रांची, श्रीमती शोभा बथवाल, श्रीमती मीरा झुनझुनवाला एवं अन्यान्य महिलाओं ने अपने-अपने विचार रखे। पुरुष वक्ताओं में डॉ. महादेव चांद, श्री ओमप्रकाश छावछरिया, श्री घनश्याम टिबड़ेवाला एवं श्री नागरमल बाजोरिया इत्यादि ने भी महिलाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला।

इस सत्र के माध्यम से महिला स्वावलम्बन पर जोर दिया गया तथा भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध को रोकने हेतु जोरदार मांग की गई।

सत्र का संचालन श्रीमती संगीता सुलतानिया (अखिल भारतीय उपाध्यक्षा) ने किया। संचालन के क्रम में उन्होंने दो कविताएं बड़े ही जोरदार ढंग से कही-

नारी को यदि आज कोख में मारोगे, कुछ सोचो कल कोख कहां से पाओगे।

धन्यवाद ज्ञापन इन पंक्तियों के साथ किया गया-

यह देश हमारा है, यह समाज हमारा है
समाज को विकसित करने का जज्बा हमारा है
आदमी को आदमी बनाने का वादा भी हमारा है।।

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन द्वारा विशिष्ठ अध्यक्ष का पुरस्कार देवघर शाखा की अध्यक्षता श्रीमती सुमन बाजला को प्रदान किया गया।●

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

पूर्वोत्तर के संविधान का पुनर्लेखन

पूर्वोत्तर की प्रादेशिक सभा ने बदली हुई परिस्थितियों में अपने संविधान में परिवर्तन की आवश्यकता महसूस करते हुए इसके लिए एक संविधान संशोधन समिति का गठन किया है जिसके सदस्य हैं :-

श्री मांगीलाल चौधरी- रोहा, संयोजक। सर्वश्री ओंकारमल अग्रवाल- गुवाहाटी, डॉ. प्रदीप जैन- गुवाहाटी, प्रमोद जैन- गुवाहाटी, ओमप्रकाश अग्रवाल- गुवाहाटी, ललित अजमेरा- विजयनगर एवं प्रदीप खदरिया- देरगांव - सदस्य।

नवगठित प्रादेशिक कार्यकारिणी समिति

श्री विजय कुमार मंगलूनिया (अध्यक्ष), श्री बजरंगलाल नाहटा (महामंत्री), श्री सांवरमल खेतावत (कोषाध्यक्ष), सर्वश्री बाबुलाल गगड़, शिवभगवान शर्मा, देवकीनन्दन जालान, शिवकुमार अग्रवाल (उपाध्यक्ष), श्री दीनदयाल सिवोटिया (संगठन मंत्री), सर्वश्री जयकिशन बजाज, के.आर. चौधरी, संजय कुमार मित्तल (संयुक्त मंत्री), सर्वश्री मोहनलाल तुलस्यान, भानीराम सुरेका, ओंकारमल अग्रवाल, ओमप्रकाश खण्डेलवाल, नवलकिशोर मोर, श्रीमती प्रेमलता खण्डेलवाल (पदेन सदस्य), डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका (शिक्षा कोष), श्री ललित धानुका (जनकल्याण कोष), श्री ओमप्रकाश चौधरी (महिला कल्याण कोष), श्रीमती रत्नप्रभा सेठी, सर्वश्री माणकचन्द नाहटा, बजरंगलाल अग्रवाल, ज्योति प्रसाद खदड़िया, पवन कुमार गाड़ोदिया, आनन्द कुमार राठी, श्रीचन्द कुण्डलिया, भगवती प्रसाद खेमका, सुरेश खेतान, वसन्त कुमार गाड़ोदिया, सत्यनारायण दाधीच, जुगलकिशोर सिंघी, प्रदीप खादड़िया, विजय कुमार तोदी, निर्मल भीमसरिया, जगदीश प्रसाद अग्रवाल, प्रह्लाद राय अग्रवाल, विजय कुमार पुंगलिया, भगवती बजाज, निर्मल हरलालका, राजकुमार बाकलीवाल, कमल बजाज एवं कैलाश शर्मा (सदस्य)।

सलाहकार समिति : सर्वश्री मोहनलाल जालान, भवरलाल सरावगी, जगन्नाथ बावरी, भगवानदास खेमका, प्रह्लाद राय तोदी, नेमचन्द करनानी, मांगीलाल चौधरी, कैलास लोहिया, रामनिरंजन गोयनका, दामोदर प्रसाद बजाज एवं श्रीमती सूर्यकान्ता बाकलीवाल।

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

दुर्गापुर : ठिठुरते गरीबों के बीच कम्बल वितरित

१५ सितम्बर '०५। ठंड से ठिठुरते लोगों के तन को ढकने के उद्देश्य से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन दुर्गापुर शाखा द्वारा दुर्गापुर शहर भर में अकस्मात कम्बल वितरण का कार्यक्रम किया गया। जिसके तहत शहर के बेनाचट्टी के ट्रक रोड, अरविन्द एवेन्यू, मेन गेट एवं दुर्गापुर स्टेशन इलाके में ठंड में ठिठुरते सैकड़ों विवश लोगों के बीच कम्बल का वितरण किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व अखिल भारतीय प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री अशोक बाजोरिया ने किया। कार्यक्रम में दुर्गापुर शाखा के कार्यकारिणी सदस्य श्री दिनेश शर्मा एवं श्री कमला प्रसाद कावड़िया आदि प्रमुख उपस्थित थे।

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

सम्बलपुर : आगामी सभापति के चुनाव एवं नई कार्यकारिणी समिति के गठन हेतु प्रक्रिया प्रारंभ

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की सम्बलपुर शाखा की वर्तमान कार्यकारिणी का कार्यकाल ३१ मार्च २००६ को पूरा होने जा रहा है। अत: नई कार्यकारिणी के गठन एवं सभापति का चुनाव आदि कार्यों हेतु आवश्यक प्रक्रिया शुरू की जा चुकी है। गोलबाजार के श्री राजकुमार पोद्दार को सर्वसम्मति से चुनाव अधिकारी मनोनीत किया गया है। कार्यकाल १-४-०६ से ३१-३-०८ तक के लिए सभापति पद हेतु चुनाव किया जाएगा। नामांकन शुल्क १००/- रु. निर्धारित किया गया है। सम्मेलन की सदस्यता ग्रहण करने की अन्तिम तिथि ३१-१-०६ थी। इसके बाद जो भी सदस्य बने हैं उन्हें मताधिकार से वंचित रहना होगा।

सभी सदस्यों से निवेदन किया गया है कि वे आगामी दो वर्षों के लिए शाखाध्यक्ष पद हेतु अपना नामांकन पत्र भर कर भेजें। चुनावी प्रक्रिया में सिर्फ शाखा सदस्य ही भाग ले सकते हैं। समाज के सभी लोगों से अनुरोध किया गया है कि वे सदस्यता ग्रहण कर संगठन से जुड़कर समाज को मजबूत करें एवं एक योग्य अनुभवी सभापति चुनने में सहभागी बने। शाखा की वार्षिक सदस्यता शुल्क १००/- रु. तथा आजीवन सदस्यता शुल्क १०००/- रुपये है।

आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

हैदराबाद : अखिल भारतीय राजस्थानी समारोह

२४-२६ दिसम्बर ०५। आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन एवं राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में अखिल भारतीय राजस्थानी समारोह- २००५ हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ, जिसमें सैकड़ों की संख्या में राजस्थानी सम्मिलित हुए। समारोह का उद्घाटन सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री शम्भुलाल विजयवर्गीय ने किया। समारोह में राजस्थान सरकार के शिक्षा मंत्री श्री घनश्याम तिवाड़ी, मुख्य अतिथि के रूप में सांसद श्री गिरीश कुमार संघी, सुप्रसिद्ध समाज सेवी सर्वश्री शिवचरण चिड़ियावाले, लक्ष्मीनारायण राठी, शान्तिलाल विशेष अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए।

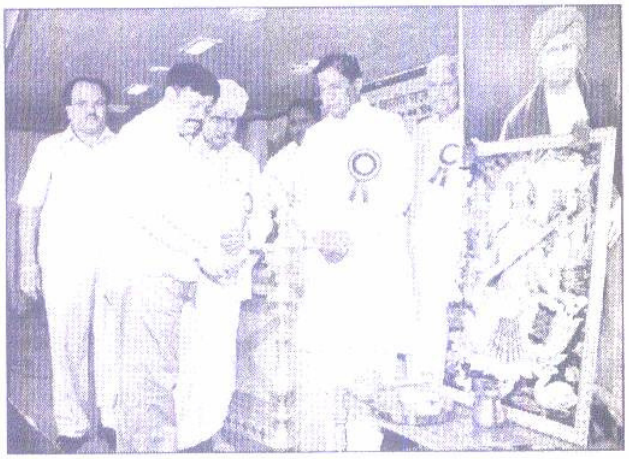

आन्ध्र-प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन एवं राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के तत्वावधान में हैदराबाद में आयोजित 'अखिल भारतीय राजस्थानी समारोह' का उद्घाटन करते हुए राजस्थान के शिक्षा मंत्री श्री घनश्याम तिवाड़ी, सांसद गिरीश संघी, सम्मेलन के अध्यक्ष रमेश कुमार बंग।

अतिथि वक्ता श्री तिवाड़ी ने कहा कि छोटे-छोटे राज्यों की भाषाओं को संवैधानिक मान्यता प्राप्त है किन्तु १२ करोड़ राजस्थानी बोलने वालों की भाषा संवैधानिक मान्यता से वंचित है। श्री तिवाड़ी ने अकादमी से आग्रह किया कि वह जयपुर में अखिल विश्व राजस्थानी समारोह का आयोजन करे, राजस्थान राज्य सरकार इसमें अपना पूरा सहयोग देगी।

उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष राज्य सभा सांसद श्री गिरीश कुमार संघी ने कहा कि राजस्थानी समाज अपनी संस्कृति को अक्षुण्ण रखने का हरसंभव प्रयास करे।

अकादमी के अध्यक्ष डॉ. देव कोठारी ने कहा कि हमारा मुख्य उद्देश्य राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता दिलाना है, इसीलिए देश के विभिन्न भागों में राजस्थानी समारोह आयोजित कर जन समर्थन जुटाने का प्रयास किया जा रहा है।

समारोह के प्रायोजक और आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रमेश कुमार बंग ने कहा कि राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता मिले इसका आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन पूर्ण समर्थन करता है। सम्मेलन द्वारा राजस्थानी भाषा, साहित्य को प्रोत्साहित करने के प्रयास और तेज किए जाएंगे।

सुप्रसिद्ध कवि श्री ताऊ शेखावटी के संचालन में राजस्थानी हास्य-व्यंग्य कवि सम्मेलन आयोजित किया गया।

समारोह के द्वितीय सत्र का विषय 'राजस्थानी भाषा साहित्य एक परिचय' था। डॉ. सी.पी. देवल सत्र के मुख्य अतिथि थे। डॉ. शर्मा, डॉ. कमलकान्त, सतीश आचार्य, एम. पोकरणा और डॉ. चन्द्र प्रकाश देवल ने विषय को विस्तारपूर्वक स्पष्ट किया। परिचर्चा का संचालन डॉ. भगवतीलाल व्यास ने किया।

'राजस्थानी साहित्य और मीरा बाई' विषय पर आयोजित द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पद्म श्री सूर्यदेव सिंह ने की। डॉ. कल्याण सिंह शेखावत मुख्य अतिथि एवं महेन्द्र कटारिया विशेष अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। पद्मश्री सूर्यदेव सिंह ने विषय प्रवर्तन किया। गौरीशंकर मधुकर ने काव्य के माध्यम से मीरा बाई का जीवन चरित्र प्रस्तुत किया। डॉ. शेखावत ने विषय पर कहा कि मीरा ही ऐसी भक्त कवयित्री है, जिनके पदों में नृत्य, गायन और बादन तीनों का ही एक साथ समावेश है।

तृतीय सत्र का विषय 'राजस्थानी भाषा-संवैधानिक मान्यता' था। सत्र की अध्यक्षता पूर्व विधायक श्री प्रेमसिंह राठौड़ ने की। सत्र के मुख्य अतिथि ओंकार सिंह लखावत, विशेष अतिथि डॉ. आर.एम. साबू एवं मुरलीनारायण बंग थे। राजस्थान से पधारे राजस्थानी भाषा के साहित्यकारों ने उपरोक्त विषय पर अपने विचार प्रकट किए। श्री रतन शाह ने कहा कि विश्व के सभी राजस्थानियों को संगठित होकर राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता दिलाने के लिए जनान्दोलन चलाना चाहिए।

आन्ध्र-प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन एवं राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी द्वारा हैदराबाद में आयोजित 'अखिल भारतीय राजस्थानी समारोह' के समापन समारोह में उपस्थित राजस्थान विधानसभा की अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा सिंह, सम्मेलन के अध्यक्ष रमेश कुमार बंग, श्री हरिनारायण शास्त्री, डॉ. देव कोठारी।

मुरलीनारायण बंग ने कहा कि जिस समाज ने अपनी भाषा और संस्कृति को विस्मृत किया, वह अतीत के गर्त में समा गया। डॉ. आर.एम. साबू ने सुझाव दिया कि राजस्थान में कम से कम राजस्थानी भाषा को अन्य प्रांतों की तरह कक्षा प्रथम से ही पढ़ाया जाना चाहिए।

समापन समारोह में राजस्थान विधानसभा की अध्यक्षा श्रीमती सुमित्रा सिंह मुख्य अतिथि थीं। राजस्थान से पधारे साहित्यकारों एवं राजस्थानी समाज के बुद्धिजीवियों ने राजस्थानी को संवैधानिक मान्यता दिलाने सम्बन्धी एक ज्ञापन श्रीमती सिंह को सौंपा। श्रीमती सिंह ने कहा कि आजादी के ५८ वर्षों बाद भी राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता न मिलना विचारणीय है। राजस्थानी भाषा के पास अपना समृद्ध व्याकरण, लोकोक्ति एवं मुहावरे युक्त उच्चस्तरीय साहित्य है, फिर भी संवैधानिक दर्जा न मिलना राजस्थान और राजस्थानी भाषा के साथ अन्याय है।

अकादमी के अध्यक्ष डॉ. देव कोठारी ने आन्ध्र प्रदेश के राजस्थानी समाज से प्रदेश में राजस्थानी युवक परिषद, राजस्थानी पुस्तकालय खोलने और हैदराबाद में एक राजस्थानी भवन बनाने का आग्रह किया।

समारोह के दौरान राजस्थानी साहित्य को अपनी उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करने के लिए सुप्रसिद्ध राजस्थानी साहित्यकार देव किशन राज पुरोहित को स्वर्गीय जमनालाल दायमा स्मृति साहित्य पुरस्कार प्रदान किया गया। समारोह में पधारे सभी साहित्यकारों को शॉल भेंट कर स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया।

राजस्थानी विकास मंच, जालौर द्वारा राजस्थानी साहित्य और संस्कृति के लिए उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करने के उपलक्ष्य में आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यी श्री रमेश कुमार बंग, सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री शम्भुलाल विजयवर्गीय, श्रीमती हेमलता शर्मा को डी. (आर.) लिट् की सम्मानोपाधि से अलंकृत किया गया। कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री श्रीगोपाल इन्नाणी विशेष अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। श्री रमेश कुमार बंग एवं श्री नरेशचन्द्र विजयवर्गीय ने श्रीमती सुमित्रा सिंह एवं अन्य अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट किए। स्वागताध्यक्ष विश्वम्भरलाल काबरा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

भुवनेश्वर : उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी महिला सम्मेलन का सप्तम अधिवेशन सम्पन्न

१७ दिसम्बर २००५। उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी महिला सम्मेलन के सप्तम अधिवेशन का उद्घाटन राज्य के आवास मंत्री श्री अनंग उदय सिंहदेव तथा सहकारिता मंत्री सुरमा पाढ़ी ने दीप प्रज्वलित कर किया। अधिवेशन में प्रदेश के विभिन्न भागों से करीब ४०० महिलाएं एवं देश के विभिन्न प्रांतों की प्रतिनिधि उपस्थित थीं। अधिवेशन में उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आगत अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र डालमिया, राज्य के पूर्व वित्तमंत्री श्री वेदप्रकाश अग्रवाल, भुवनेश्वर मारवाड़ी समाज के सचिव श्री शिव कुमार

अग्रवाल, महिला सम्मेलन की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सावित्री बापना, श्रीमती प्रेमा पंसारी, श्रीमती जया डोकानिया, श्रीमती पार्वती मोदी, श्रीमती रानी खेमका आदि सम्माननीय प्रतिनिधि एवं पदाधिकारी उपस्थित थे। प्रादेशिक अध्यक्षा श्रीमती निर्मला बंका ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि अपनी संस्कृति को बचाये रखने के लिए शिक्षा का प्रसार अति आवश्यक है, शिक्षारूपी तेल की बाती से ही ज्ञान का दीप प्रज्वलित होगा - इस प्रकाश से परिवार, समाज और राष्ट्र आलोकित होगा। जब कोई व्यक्ति अपने मस्तिष्क का ५% उपयोग करता है तो वह नेता बनता है या विशेष उद्योगपति, वैज्ञानिक, इंजिनीयर बनता है- समाज में उसकी किसी न किसी रूप में विशेष पहचान बनती है। यदि हम ७-८% अपने मस्तिष्क का उपयोग करें तो पूरे विश्व में अपनी पहचान बना सकते हैं। एक सामान्य व्यक्ति सिर्फ २-३% ही अपने मस्तिष्क का उपयोग करता है। हमारे पास बहुत बड़ी शक्ति है। जरूरत है उसे क्रियाशील करने की। इसके लिए जरूरी है सकारात्मक सोच की। सकारात्मक सोच रखने में ५०% समस्याओं का समाधान अपने आप हो जाता है। हमारी कार्य करने की शक्ति दूगुनी हो जाती है। बहनें अपने अधिकार क्षेत्र को पहचानें। अपव्यय और आडम्बर से बचें। अपने आपको सुदृढ़ बनाकर समाज को संगठित करें, फिर हम देश को एक उज्ज्वल भविष्य प्रदान कर सकते हैं। सचिव श्रीमती बीना बिरला ने सम्मेलन की गतिविधियों, नई शाखा का गठन, शिक्षण प्रशिक्षण एवं प्रौढ़ शिक्षा, विकलांग सहायता, स्वरोजगार, भ्रूण हत्या निर्मूलन, वृक्षारोपण, परिवार नियोजन, स्थाई प्रकल्प, पानी की टंकी, बस स्टैण्ड पर शेड, बस्तीयों में शौचालय का निर्माण तथा महिला सम्मेलन द्वारा आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में योगदान पर प्रकाश डाला। श्री अनंग उदय सिंहदेव ने सरकार की ओर से हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया। सम्मेलन के आगत प्रांतीय अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र डालमिया ने महिला सम्मेलन के आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि उन्हें भी महिला सम्मेलन के साथ की जरूरत होगी।

राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सावित्री बापना, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती प्रेमा पंसारी, श्रीमती जया डोकानिया आदि ने नारी के आत्मनिर्भरता एवं स्वावलम्बन पर बल देने, शिक्षा के प्रति जागरुक होने, उद्यमी बनने एवं अपनी आवाज को बुलन्दी देकर दिल्ली तक पहुंचाने का आह्‌वान किया।

इस अवसर पर पूर्व मंत्री श्री वेद प्रकाश अग्रवाल द्वारा 'अपनी बात' पत्रिका एवं कटक शाखा द्वारा सम्पादित 'प्रेरणा' पत्रिका का विमोचन किया गया। श्रीमती सुधा खण्डेलवाल एवं उनकी सहेलियों ने स्वागत गीत तथा श्रीमती प्रीति अग्रवाल एवं श्रीमती अनुराधा मोदी ने वंदना आदि प्रस्तुत किया। श्रीमती सुधा अग्रवाल ने सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन किया।

द्वितीय सत्र : शाखा परिचय से सत्र आरम्भ किया गया। सभी शाखाओं को मंच पर आमंत्रित कर उनका परिचय करवाया गया। राष्ट्रीय अध्यक्षा ने सभी शाखाओं को नागपुर आने का निमंत्रण दिया।

पूर्व प्रादेशिक अध्यक्षा सत्र २००२-२००४ श्रीमती पार्वती मोदी ने अपने कार्यकाल की विवरणी पढ़ी एवं पुरस्कार वितरण किया।

पूर्व प्रादेशिक अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा खेतान द्वारा सत्र २०००-२००२ का पुरस्कार वितरण किया गया।

तृतीय सत्र : तृतीय सत्र का विषय था 'वृद्धा आश्रम - कितना जरूरी'। इस सत्र की संयोजिका थी श्रीमती रेखा राठी (राष्ट्रीय सचिव), श्रीमती लता अग्रवाल (झारखण्ड प्रादेशिक अध्यक्षा) एवं श्रीमती सरला अग्रवाल (निर्वाचित उत्कल प्रादेशिक अध्यक्षा २००६-२००८) एवं अन्य। इस विषय पर लगभग १५ महिलाओं ने अपने विचार प्रस्तुत किये। कुछ बहनों का विचार था कि भारतवर्ष की संस्कृति में वृद्धाश्रम की जरूरत बिल्कुल नहीं है तो कुछ बहनों का कहना था कि एकल परिवार होने की वजह से यह आज के समय की आवश्यकता है। इस सत्र की विशेषता रही- संचालन वक्ताओं को समय सीमा में बांधे रखना, सत्र संयोजिका रेखा राठी की शायरी, श्रीमती लता अग्रवाल एवं श्रीमती सरला अग्रवाल का सारगर्भित विश्लेषण। श्रीमती राठी ने कार्यक्रम का अति सुन्दर संचालन किया।

चतुर्थ सत्र : यह सत्र सांस्कृतिक कार्यक्रम का सत्र था। इसकी संयोजिका थीं श्रीमती सुधा खण्डेलवाल। इस कार्यक्रम में लोक गीत एवं नृत्य तथा नृत्य नाटिका का अयोजन किया गया।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

कांटाबाजी : राष्ट्रीय अधिवेशन सफलता-सह सम्पन्न

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच का अष्टम राष्ट्रीय अधिवेशन 'उल्लास पर्व- २००६' रायपुर सेन्ट्रल शाखा के आतिथ्य में छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में सफलता-सह सम्पन्न हुआ। इस तीन दिवसीय अधिवेशन में चौदह प्रांतों में अवस्थित मंच की पांच सौ शाखाओं से तीन हजार प्रतिनिधियों ने अंश ग्रहण कर मंच ने बीस वर्षों में जो 'उपलब्धियां' अर्जित की है उसका 'अवलोकन' कर भविष्य के आयोजनों का निर्धारण किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलराम सुलतानिया की अध्यक्षता में आयोजित इस अधिवेशन का उद्‌घाटन छत्तीसगढ़ के महामहिम राज्यपाल श्री के.एम. सेठ ने मशाल प्रज्वलित कर उद्‌घाटन किया। राज्यपाल श्री सेठ ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि देश की प्रगति हेतु युवाओं को साहस, सूझ-बूझ व पूरे जोश से आगे आना चाहिए। उन्होंने देश के विकास में मारवाड़ियों के योगदान हेतु बधाई दी। अन्य अतिथिगणों के साथ मंच पर सांसद श्री सुरेन्द्र लाठ भी उपस्थित थे।

अधिवेशन के दौरान राष्ट्रीय सभा भी आयोजित हुई। जिसमें राष्ट्रीय महामंत्री श्री पुरुषोत्तम शर्मा ने महामंत्री का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। समारोह में राष्ट्रीय व प्रांतीय पदाधिकारियों के साथ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कैलाश चन्द अग्रवाल, उत्कल के प्रांतीय अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल मंच एवं छत्तीसगढ़ के प्रांतीय अध्यक्ष श्री पीताम्बर अग्रवाल, राष्ट्रीय सह-संयोजक श्री सुभाष अग्रवाल,

राष्ट्रीय सभा सदस्य श्री राजेश अग्रवाल व शाखाध्यक्ष श्री नारायण अग्रवाल उपस्थित थे।

सभा में सत्र २००४-०५ हेतु राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्रदान किये गये। जिसमें कांटाबांजी मिड टाउन (महिला) शाखा को विशिष्ट शाखा का पुरस्कार एवं अध्यक्षीय पुरस्कार के तहत 'क्षेत्र-घ' से सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रीय सभा सदस्य का पुरस्कार श्री राजेश अग्रवाल को प्रदान किया गया।

अधिवेशन के अवसर पर उद्यमी सत्र में कई जाने-माने उद्योगपतियों ने उद्योग के विषय में जानकारी दी तथा राजनीति चेतना सत्र में विभिन्न पार्टियों के राजनेताओं ने मारवाड़ी समाज के युवाओं को सक्रिय राजनीति में आने का आह्वान किया।

नारी चेतना सत्र में भारी संख्या में महिलाएं उपस्थित थीं। मंच पर अन्य पदाधिकारियों के साथ राष्ट्रीय सह-संयोजिका व शाखाध्यक्ष श्रीमती ममता जैन भी उपस्थित थीं। इस सत्र में प्रांतीय संयोजिका कुमारी आशा गुप्ता ने 'प्रगति पर महिलाएं व समाज में बढ़ते कदम' विषय पर अपने विचार रखे।

राष्ट्रीय अलंकरण समारोह में जनसेवा, पत्रकारिता व विशिष्ट एवं मौलिक शोध हेतु स्मृति पुरस्कार प्रदान किये गये तथा राष्ट्रीय गीत व चित्रकला के भी पुरस्कार प्रदान किये गये। अधिवेशन में विशेषांक 'मंचिका' एवं रामपुर सेन्ट्रल द्वारा प्रकाशित 'म्हारो लक्ष्या' पत्रिका विमोचन किया गया। अधिवेशन में प्रतिनिधि सभा व उन्मुक्त सत्र भी आयोजित हुए। जिसमें सदस्यों ने अपने सुझाव रखें।

राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर प्रात: एक विराट शांति उद्भावना पदयात्रा निकली।

अधिवेशन के अंतिम दिन समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे छत्तीसगढ़ प्रशासन के मंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल। श्री अग्रवाल ने मारवाड़ी समाज के गौरव, त्याग व बलिदान को सर्व समाज में फैलने की जरूरत बताते हुए कहा कि मारवाड़ी समाज के प्रचार की जरूरत है। महाराष्ट्र के विधायक श्री राजेन्द्र राजपुरोहित ने कहा कि मारवाड़ी समाज की गौरव गाथा हेतु एक चैनल शुरू होना चाहिए। इस अवसर पर बनारस के श्री अनिल जाजोदिया को नया राष्ट्रीय अध्यक्ष चुन शपथ दिलाई गई तथा पांच क्षेत्रों में से 'क्षेत्र-घ' से बरगड़ के श्री जयप्रकाश लाठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष चुने गये एवं दिल्ली के श्री रवि अग्रवाल को राष्ट्रीय कार्यालय का उपाध्यक्ष मनोनित किया गया।

अन्य संस्थाएं

शक्ति का आधार है - डाक्टर, ऊर्जा का स्रोत है - दवाई

और इस जगत का संचालक सर्वव्यापक जो तत्व है, जो शक्ति है, वही ईश्वर है, वही प्रकृति का सेवक है और इन सभी का मिश्रण है वही ईश्वर है, वही जीवनदान है।

कोलकाता स्वीमिंग क्लब में श्री भानीराम सुरेका द्वारा आयोजित परिचर्चा सत्र में प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ व एशियन हार्ट इंस्टीच्यूट, मुम्बई के चेयरमैन डा. रमाकान्त पांडा का स्वागत करते हुए बाएं से सर्वश्री रामअवतार गुप्ता, हरिप्रसाद बुधिया, भानीराम सुरेका, डा. पांडा, सीताराम शर्मा, हरिप्रसाद कानोड़िया, मोहनलाल तुलस्यान, बालूराम सुरेका। आयोजन में महानगर के अनेक गणमान्य लोगों में सर्वश्री डा. गोविन्द प्रसाद कुसुम, नेपाल के कॉन्सल जेनरल, श्यामलाल जालान, जगदीश बेरीया, रामगोपाल बागला, डी.डी. दुजारी, राजकुमार सराफ, गौरीशंकर कायां, सांवरमल अग्रवाल, शिवशंकर खेमका, विश्वनाथ कहनानी, डूंगरमल सुरेका, दीपचन्द नाहटा, प्रेमचन्द सुरेलिया. विश्वम्भर दयाल सुरेका आदि उपस्थित थे।

कोलकाता : भगवान श्री बैकुण्ठनाथजी की शोभायात्रा सुसम्पन्न

२६ जनवरी ०६। भगवान श्री बैकुण्ठनाथजी की एक भव्य शोभायात्रा कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट चित्तरंजन एवेन्यू महात्मा गांधी रोड कलाकार स्ट्रीट एवं पुन: कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट होते हुए मन्दिर परिसर में वापस आयी। शोभायात्रा में बांगड़ परिवार एवं महानगर के धर्मानुरागी जनसमुदाय बड़ी मात्रा में श्रद्धापूर्वक शामिल हुए। स्थान-स्थान पर जनसमुदाय द्वारा भगवान के रथ पर

पुष्पमालाएं चढ़ाई गई, पुष्प वर्षा की गई एवं प्रसाद चढ़ाकर भक्तजनों में वितरित किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री डीडवाना नागरिक सभा के सदस्यों ने किया।

हैदराबाद : महेश बैंक एवं मैक्स न्यूयार्क लाइफ् की साझेदारी वाली शाखाएं सम्मानित

१ फरवरी। ए.पी. महेश को-ऑपरेटिव अर्बन बैंक लिमिटेड ने बैंक की 'मेक्स न्यूयार्क लाईफ' के साथ भागीदारी को सफल बनाने वाली शाखाओं, चारमिनार तथा मलक पेट शाखा को चेयरमैन अवार्ड ट्रफी से सम्मानित किया। बैंक के चेयरमैन एवं आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रमेश कुमार बंग ने कहा कि बैंकिंग की सफलता ग्राहकों से निकट सम्बन्धों और उनकी संतुष्टि पर निर्भर करती है। इस योजना के माध्यम से हम अपने ग्राहकों के साथ अपने सम्बन्धों को और अधिक सुदृढ़ बना सकेंगे। वर्तमान में बैंक के लगभग ४०,००० शेयर हो रहा है और इसी के कैपीटल राशि रु. ग्यारह करोड़ है।

बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी आर.एस. जाजू, बैंक बीमा के अध्यक्ष एवं मैक्स न्यूयार्क लाइफ के उपाध्यक्ष बी. शिवानन्द ने भी लोगों को सम्बोधित किया।

श्री कलकत्ता अग्रवाल समिति द्वारा सम्पन्न हुआ सामूहिक विवाह

कोलकाता, १९ फरवरी। श्री कलकत्ता अग्रवाल समिति द्वारा सामूहिक विवाह आयोजन भव्यतापूर्वक सम्पन्न हुआ। बढ़ते दहेज और फिजूलखर्ची रोकने के लिए समिति द्वारा शुरू किये गये परिचय सम्मेलन और सामूहिक विवाह के आयोजन के तहत इस बार १३ जोड़े हिन्दू परम्परा से परिणय सूत्र में बंधे। सामूहिक बारात दोपहर एक बजे श्री सत्यनारायण मंदिर, कॉटन स्ट्रीट से निकली। इस अनोखी बारात को देखने के लिए सड़क के दोनों ओर भारी संख्या में लोग खड़े थे। विवाह स्थल पर मंत्रोच्चार के साथ वैवाहिक विधि पूरी की गई। सभी वर-कन्या के परिजन तथा समाज के गणमान्य लोगों की साक्षी में नवदम्पत्ति ने सुखद वैवाहिक जीवन में प्रवेश किया। नवजोड़ों को समिति की ओर से आकर्षक उपहार प्रदान किया गया। एक साथ १३ बेटियों की विदाई से सभी की आंखें नम हो गई। किन्तु खुश भी थे कि इन जोड़ों ने आज से नई जिन्दगी शुरू की है। इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य लोगों ने समिति के इस प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि परिचय सम्मेलनों एवं सामूहिक विवाह को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि दहेज, फिजूलखर्ची तथा शादी में होने वाली परेशानी से लोगों को बचाया जा सके। समिति के ट्रस्टी, अध्यक्ष श्री शांति प्रकाश गोयनका, श्री श्याम सुन्दर सराफ, मंत्री, श्री ओम प्रकाश रूईया तथा सदस्यगण आयोजन की सफलता में सक्रिय रहे।●

सभी सदस्यों के सूचनार्थ

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा राजस्थान फाउण्डेशन, कोलकाता के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित पहली बार राजस्थानी फिल्म 'बाई चाली सासरिया' २५ मार्च २००६, शनिवार की शाम को सिटी सेन्टर व आइनॉक्स फोरम में प्रदर्शित किया जाएगा। प्रवेश कार्ड हेतु सम्मेलन कार्यालय १५२ बी महात्मा गांधी रोड कोलकाता- ७ दूरभाष : २२६८ ०३१९ से सम्पर्क करें। मूल्य प्रति कार्ड ५०/- रुपया है।

Wonder Images Pvt. Ltd.

we print on

FLEX

SAV

MESH

ONE-WAY VISION

FLOOR ETCHING

UK MEDIA

LAMINATION

CANVAS

Etc.

Contact :-

22155479

22155480

9830045754

9830051410

9830425990

9830768372

9830590130

9331854244

9231699624

154, LENIN SARANI,

KOLKATA-13

2nd Floor

MACO GEL Makesworth Industries Ltd.

"KAMALALAYA CENTRE"
Suite 504, 5th Floor
156A, Lenin Sarani, Kolkata-700 013

MACO GEL is a high profile product of **Makesworth Industries Ltd. (MIL)**, a part of the Makesworth group that excels in distribution of Industrial oils, rubber hoses, plastics and allied products in eastern India.

MACO GEL in its various grades is formulated by employing the most modern technology. This ensures total compatibility with cable polymers and coatings. It has excellent water blocking property as well as processibility for case and minimising down time during cable production.

The **MIL** plant located on the outskirts of Kolkata on Diamond Harbour Road, has state of the art technology and R & D facilities.

MACO GEL—THE PRODUCT

Category : Cable filling compounds. Soft pasty, hydrophyllic gel formulated from high quality base oil and other hi-tech ingredients which provide superior water blocking capacity over a wide temperature range.

Application : The ideal water resistant material for filling the interstices in Multipair Polyethylene insulated and sheathed telephone cables, ingress of moisture into cable sheath damage occurs.

Features : A homogeneous compound and containing a suitable antioxidant. Easy removal by wiping from insulated conductors.

Transparent, so does not obscure the colour identification of the polyethylene insulation.

Fully compatible with polyethylene of medium and high density.

No unpleasant odour. No toxic or dermatic hazards.

Stable without migration.

FILL LONG LIFE INTO YOUR CABLE

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

To,